मदरसह दस्तूर तालीम मेरठ

जगद्भूगोल

॥ पहिला भाग ॥

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमदेशाधिकारी
श्रीयुत नव्वाब लेफ्टिनेंट गवर्नर बहादुर की
आज्ञानुसार

मुन्शी ईश्वरीप्रसाद सर्वेंग मास्टर मदरसह
दस्तूर तालीम मेरठ ने अपने बनाये हुए
जग़राफ़ियह आलम का नागरी
में उल्था किया

इलाहाबाद

गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गया
सन् १८७७ ई०

...th edition, 10,000 copies, | चौदहवीं बार १०,००० पुस्तकें
...ce, per copy, 2½ annas. | मोल फ़ी पुस्तक =)॥ आने

Price - /2/6,

6384.
A

Acc No 6384
A & B
Bound together

891.43
B14J

Jagat Bhugool
by
Badri Prasad

जगद्भूगोल

॥ पहिला भाग ॥

पश्चिमोत्तर सूबे का बयान

पश्चिमोत्तर सूबे के पूर्व में बिहार, पालामऊ और पश्चिम में यमुना नदी जिसके पार पंजाब का इलाक़ा है और भरतपुर और उत्तर में नैपाल, अवध, कमायूं का पहाड़ और दक्षिण में रीवां का इलाक़ा बुन्देलखण्ड, ग्वालियर, धौलपुर। लंबाई पूर्व पश्चिम ६०० मील और चौड़ाई उत्तर दक्षिण २०० मील ॥

इसका पश्चिमोत्तर सूबे नाम पड़ने का सबब यह है कि पहिले ही पहिल अंगरेज़ों ने बंगाले को जीता था और ये कई ज़िले बंगाले से पश्चिमोत्तर में थे इसलिये बंगाले की निस्वत इनको पश्चिमोत्तर सूबा कहने लगे ॥

पश्चिमोत्तर सूबे में गंगा, यमुना, रामगंगा, घाघरा, गोमती, देवहा, कोसी, शोण, बेतवा, कीन ये

नदियां १० नदियां मशहूर हैं जिन में से (कीन) बुन्देलखण्ड के पहाड़ों से निकल कर बांदे के नज़दीक और (बेतवा) गोंड़वाने से निकल कर हमीरपुर के नज़दीक यमुना में मिल गई हैं और (शोण) बिंध्याचल से निकल कर छपरे के साम्हने गंगा में जा मिली है और बाक़ी सब नदियां हिमालय पर्वत से निकल कर गंगा से मिलती हुईं समुद्र में जा मिली हैं॥

नहर पश्चिमोत्तर सूबे में २ नहरें हैं १ (गंगा की नहर) जिसको सहारनपुर के ज़िले हरिद्वार से निकाल कर कान्हपुर में फिर गंगा से मिला दिया है इसी नहर में से एक शाखा अलीगढ़ के ज़िले के नानऊ गांव के पास से निकाल कर कालपी के नज़दीक यमुना में मिला दी है और दूसरी शाखा मुज़फ़्फ़र नगर के ज़िले के जौली गांव से निकाल कर फ़र्रुख़ाबाद में गंगा से मिला दी है और यह फ़तहगढ़ की नहर के नाम से मशहूर है पर यह शाखा अभी अनूपशहर तक बनी है॥

२ (यमुना की नहर) जिसको सहारनपुर के ज़िले की उत्तर तरफ़ से निकाल कर सहारनपुर मुज़फ़्फ़रनगर मेरठ के ज़िले में लेजाकर देहली के नज़दीक फिर यमुना में मिला दिया है॥

पश्चिमोत्तर सूबे में ५ आईनी और २ ग़ैर आईनी

क़िस्मत क़िस्मतें हैं॥

	क़िस्मतों के नाम	ज़िलों के नाम जो क़िस्मतों में हैं	
आईनी क़िस्मतें	बनारस	आज़मगढ़, ग़ाज़ीपुर, बनारस, मिर्ज़ापुर, गोरखपुर और बस्ती	
	इलाहाबाद	इलाहाबाद, फ़तहपुर, बांदा, हमीरपुर, कान्हपुर और जौनपुर	
	आगरा	इटावा, फ़र्रुख़ाबाद, एटा, मैनपुरी, आगरा, मथुरा	देहरादून ग़ैर आईनी ज़िला है
	मेरठ	अलीगढ़, बुलंदशहर, मेरठ, मुज़फ़्फ़रनगर, सहारनपुर, देहरादून	
	रुहेलखण्ड	शाहजहांपुर, बरेली, बदायूं, मुरादाबाद, बिजनौर	
ग़ैर आईनी क़िस्मतें	झांसी	झांसी, जालौन, ललितपुर	
	कमायूं	कमायूं गढ़वाल, और तराई	

पश्चिमोत्तर सूबे का ख़ास शहर इलाहाबाद है जिसको प्रयाग भी कहते हैं और कमायूं की क़िस्मत का ख़ास शहर अलमोड़ा और गढ़वाल के ज़िले का पावड़ी है रुहेलखण्ड का ख़ास शहर बरेली है और बाक़ी क़िस्मतों और ज़िलों के ख़ास शहर इन्हीं क़िस्मतों और ज़िलों के नाम से हैं ॥

पश्चिमोत्तर सूबे के ज़िलों में प्रसिद्ध क़सबे इस तरह हैं कि (गोरखपुर) के ज़िले में मियांगंज, मग़फ़ूरगंज (आज़मगढ़) में अज़ीमाबाद, सिकन्दरपुर (ग़ाज़ीपुर) में बल्लिया, मुहम्मदाबद (बनारस) में चंदौली, (मिरज़ापुर) में चिनार, शाहगंज (इलाहाबाद) में सिकन्दरा, खैरागढ़ (फ़तहपुर) में ग़ाज़ीपुर (बांदे) में स्यौहट (कान्हपुर) में बिठूर, देरह, मंगलपुर (इटावे) में खलना, फफूंडा (फ़र्रुख़ाबाद) में शम्साबाद, छपरामऊ, क़नौज (एटे) में कासगंज, अलीगंज सोरों (मैनपुरी) में भोगांव, शिकोहाबाद, मुस्तफ़ाबाद (आगरे) में फ़तहपुर सीकरी, फ़िरोज़ाबाद (मथुरा) में माठ महाबन, वृन्दाबन, जलेसर, नन्दगांव, बरसाना, गोवरधन (अलीगढ़) में हाथरस, सिकन्दरहराऊ, टप्पल, अतरौली (बुलन्दशहर) में अनूपशहर, सिकन्दराबाद, खुर्ज़ा, शिकारपुर (मेरठ) में हापुर, गढ़मुक्तेश्वर, सर्धना, बड़ौत (मुज़फ़्फ़रनगर) में शामली, खतौली, थानेभवन (सहारनपुर) में देवबंद, रुड़की, कनखल, हरिद्वार (शाहजहांपुर) में तिलहर पुवायां (बरेली) में बीसलपुर, पीलीभीत, आंवला, (बदायूं) में सहसवान (मुरादाबाद) में संभल, अमरोहा, ठाकुरद्वारा, काशीपुर, चंदौसी (बिजनौर) में नगीनह, नजीबाबाद, शेरकोट (झांसी) में काल्पी (ललितपुर) में चंदेरी (अलमोड़े) में नैनीताल ॥

मशहूर चीज़ें और जगह — पश्चिमोत्तर सूबे के शहरों और क़सबों में मशहूर चीज़ें और जगह हैं (मिरज़ापुर) के पीतल के बरतन

मशहूर हैं और मिरज़ापुर से बारह कोस पूर्व को गंगा के किनारे चिनारगढ़ का क़िलअ़ है और चिनारगढ़ से ३ मील पर शेख़ क़ासम सुलेमानी का रौज़ा बहुत अच्छा है (बनारस) में बुढ़वा मंगल का मेला बहुत अच्छा होता है और सरकारी कालेज अच्छा बना है (जौनपुर) में गोमती नदी का पुल देखने लायक़ है और तेल इतर यहां का मशहूर है (ग़ाज़ीपुर) में गुलाब और गुलाब का इतर निहायत ख़ुशबूदार होता है (गोरखपुर) में गुरू गोरखनाथ का मंदिर है (इलाहाबाद) में पत्थर का क़िलअ़ गंगा, यमुना के संगम पर बहुत अच्छा बना है जिस में मकर की संक्रांति को बड़ा भारी मेला होता है (आगरे) में शाहजहां बादशाह की मुम्ताज़ महल बेगम का रौज़ा जिसको लोग ताजबीबी का रौज़ा कहते हैं अति शोभायमान है और शहर से ३ कोस पर सिकन्दरे का रौज़ा जिस में अकबरशाह की क़ब्र है और यमुना पार एत्तमादुद्दौलह का रौज़ा और रामबाग़ दर्शनीय हैं और आगरे में पच्चीकारी का काम और नैचे भी अच्छे बनते हैं (फ़तहपुरसीकरी) में सलेम चिश्ती का रौज़ा और अकबरशाह का महल और उसके वज़ीर फ़ैज़ी और बीरबल वग़ैरः के महल बहुत ऊंचे और ख़ूबसूरत बने हैं (वृन्दावन) में लाला बाबू का मन्दिर दूसरा रंगजी का जिसको लक्ष्मीचंद सेठ ने बनाया है देखने के लायक़ है और कुंजें भी यहां की रमणीय हैं (मथुरा) में नबीजी की मसजिद

कंसटीला बिश्राम घाट मशहूर हैं और पेड़े भी यहां के सुस्वादु होते हैं (फ़र्रुख़ाबाद) में सौदागरी की चीज़ें कपड़ा वग़ैर: बहुत आते हैं और पीतल के बरतन भी अच्छे होते हैं (क़नौज) में काग़ज़ अच्छा बनता है (सहारनपुर) का कम्पनी बाग़ और (रुड़की) में धूएं की कल का कारख़ाना और सरकारी कालेज देखने के लायक़ है। रुड़की में सुलानी नदी का पुल बांध कर नहर ऊपर से निकाली है और ज्वालापुर के समीप नहर का पुल बांध कर नदी ऊपर से निकाली है और रुड़की से थोड़ी दूर पर पीरान कलियर में किसी पीर की क़ब्र है जहां बरस भर में एक मेला बहुत अच्छा होता है और तीन दिन तक रहता है (हरिद्वार) में चैत में एक मेला गंगास्नान का बड़ा भारी होता है (मेरठ) में नौचन्दी का मेला चैत के महीने में बहुत अच्छा होता है और तीन दिन तक रहता है (बड़ौत) में लोहे के बर्तन अच्छे बनते हैं (सरधने) में शिमरू की बेगम का गिरजा देखने के लायक़ है (गढ़मुक्तेश्वर) में कार्त्तिक का मेला बड़ा भारी होता है और आठ नौ दिन तक रहता है (बदायूं) में एक मस्जिद पुराने वक़्त की अभी तक है (सहसबान) में केवड़ा बहुतायत से पैदा होता है (मुरादाबाद) में पारे की क़लई का काम बहुत अच्छा होता है (अमरोहे) में मिट्टी के बर्तन बहुत हलके और सुन्दर बनते हैं और यहां मीरा का समाधिस्थान बहुत मशहूर है (काशीपुर)

की छीटें (शाहजहांपुर) के चाकू सरौते (तिलहर) के तीर कमान संदूक़चे पलंग के पाये (बरेली) की कुर्सियां (पीलीभीत) के चांवल (नगीने) के आबनूस के कंघे और क़लमदान (नजीबाबाद) के फूल के बर्तन (काल्पी) की मिसरी और काग़ज़ मशहूर हैं (कमायूं) की क़िस्मत में बद्रीनाथ और केदारनाथ का मंदिर है ॥

पश्चिमोत्तर सूबे में सरिश्ते तालीम की ४ क़िस्मतें इन्स्पेक्टृगी हैं १ (मेरठ) जिस में मेरठ और रुहेलखंड कमिश्नरी मिली हुई है २ (आगरा) जिस में आगरा और झांसी की कमिश्नरी और कोई २ ज़िलअ इलाहाबाद की कमिश्नरी का मिला है ३ (बनारस) जिस में बनारस की कमिश्नरी और कोई २ ज़िलअ इलाहाबाद की कमिश्नरी का मिला हुआ है ४ (कमायूं)। सरिश्ते तालीम की हर एक क़िस्मत के हाकिम को इन्स्पेक्टर कहते हैं और सब क़िस्मतों के बड़े हाकिम को डाइरेक्टर आफ़ पबलिक इन्स्ट्रक्शन और आज कल इस उहदे पर श्रीयुत केम्पसन् साहिब बहादुर हैं ॥

पश्चिमोत्तर देश में ४ कालेज हैं १ आगरा कालेज कालेज २ म्यूर कालेज (इलाहाबाद) ३ बनारस कालेज ४ रुड़की कालेज और अकसर ज़िलों के ख़ास जगहों में एक एक अंगरेज़ी स्कूल है इनके सिवाय ख़ास जगह आगरा और बनारस में एक २ मदरसह दस्तूर तालीम है कि वहां पर उसी इन्स्पेक्टृगी के हलक़हबन्दी और

तहसीली पाठशाला के पढ़नेवाले बारी बारी से पढ़ने को आते और साल भर पढ़ते हैं ॥

हिंदुस्तान का बयान

हिन्दुस्तान के उत्तर में हिमालय पहाड़ और दक्षिण में हिन्द का समुद्र और पूर्व में ब्रह्मा का देश और पश्चिम में अरब का समुद्र और अफ़ग़ानिस्तान है। हिन्दुस्तान का आकार त्रिभुज का सा है। लम्बाई उसकी ज्यादह से ज्यादह कश्मीर से कन्य-कुमारी तक १८०० मील और चौड़ाई किरांची बंदर से ब्रह्मा के देश तक १६०० मील। मनुष्य संख्या २४ किरोड़ के अनुमान और क्षेत्रफल लग भग १५ लाख वर्गात्मक मील के है ॥

पर्वत

हिन्दुस्तान के मशहूर पहाड़ों में से १ (हिमालय) जो हिन्दुस्तान के उत्तर में पूर्व पश्चिम अनुमान २ हज़ार मील के चला गया है और कोई २ चोटी उसकी जैसे एवरेस्ट धवलगिर, किनचिनचिंगा वग़ैर: २८ हज़ार से ३० हज़ार फ़ुट तक ऊंची है और उसी की एक शाखा को जो सहारनपूर और देहरादून के बीच में है शवालक कहते हैं २ (बिंध्याचल) जो हिन्दुस्तान के बीच में गुजरात से राजमहल तक चला गया है ३ (सह्याद्री) जिसके एक हिस्से को (पश्चिमीघाट) कहते हैं जो कन्याकुमारी से पश्चिमी किनारे २ बिंध्याचल तक चला गया है और दूसरा हिस्सा जो

पूर्वी ओर कन्याकुमारी से कर्णाटक देश में चला गया है उसको (पूर्वीघाट) कहते हैं ॥

इनके सिवाय और छोटी २ पहाड़ियां जैसे सतपुड़ी, अर्बली, मलयागिरि, राजमहल वग़ैर: हैं ॥

नदियां

हिन्दुस्तान की मशहूर नदियों में सब से बड़ी और मशहूर नदी गंगा है जो सहारनपुर के उत्तर हिमालय पहाड़ से निकल कर दक्षिण और पूर्व को लगभग १५ सौ मील बह कर बहुत सी धारों से बंगाले की खाड़ी में गिरती है और जो धार कलकत्ते के नीचे बही है उसका नाम भागीरथी और हुगली है और इसके निकलने की जगह को गंगोत्री कहते हैं और इस में कई नदियां जैसे यमुना, शरजू, शोण, गंडकी, ब्रह्मपुत्र वग़ैर: आ मिली हैं और शोण के सेवाय और सब नदियां हिमालय पहाड़ से निकली हैं और (शोण) बिंध्याचल से निकल कर छपरे के साम्हने गंगा में जामिली है और (यमुना) प्रयाग में (शरजू) दानापुर के समीप और (गंडकी) बिहार में गंगा से मिली है और (ब्रह्मपुत्र) मानसरोवर के पास हिमालय की उत्तर ओर से निकल कर और तिब्बत के देश भर में बह कर हिन्दुस्तान में आकर उसकी दो धारें हो गई हैं जिन में से एक धार पूर्व की ओर मेघना के नाम से बहती है और दूसरी धार पश्चिम को बहकर जिनाई के नाम से जाफ़रगंज के नज़दीक गंगा से मिली है ॥

(चम्बल) बिंध्याचल से निकलकर इटावे से १२ कोस नीचे यमुना में गिरती है (सिंधु) नदी जिसको अटक भी कहते हैं हिमालय पर्वत से निकल कर दक्षिण और पश्चिम को १७ सौ मील बह कर कई धारें होकर सिंधु देश में कच्छ की खाड़ी में जा गिरी है और इस में सतलज, व्यासा, रावी, चनाब, झेलम ये नदियां आ मिली हैं जिन में से सतलज तो हिमालय की उत्तर तरफ़ मानसरोवर के पास से और बाक़ी ४ नदियां हिमालय की दक्षिण तरफ़ से निकल कर आपस में एक दूसरी से मिलती हुई (पंचनद) के नाम से मिट्ठनकोट के नज़दीक सिंधु में गिरती हैं इसी सबब से उस देश को जहां ये पांच नदियां बहती हैं (पंजाब) कहते हैं। व्यास नदी हरा के पट्टन के नज़दीक सतलज से मिलती है और रावी मुलतान से २० कोस ऊपर और झेलम झंग से १० कोस ऊपर चनाब नदी में आमिली हैं और सतलज बहावलपुर से २० कोस नीचे चनाब से मिलकर पंचनद के नाम से ३० कोस बह कर मिट्ठनकोट के नीचे सिंधु में गिरती है। संस्कृत में सतलज को शतद्रु और व्यास को बिपाशा और रावी को ऐरावती और चनाब को चंद्रभागा और झेलम को बितस्ता लिखा है। दक्षिण में (नर्मदा) नदी शोण के सोते के नज़दीक बिंध्याचल से निकल कर पश्चिम दिशा को ७ सौ मील बहकर भड़ोंच के नज़दीक खंभात की खाड़ी में जा गिरी है ताप्ती नदी बेतोल के

पास सतपुड़ी पहाड़ से निकलकर ४५० मील बहकर सूरत के नीचे खंभात की खाड़ी में गिरी है (गोदावरी) पश्चिमी घाट में चिमेक म निकलकर बरदा और मानगंगा इन दोनों नदियों को जो गोंड़वाने के इलाक़े से निकली हैं लेती हुई ६०० मील बहकर राजमहेंद्री के नीचे समुद्र से जा मिली है (कृष्णा) पश्चमी घाट में सितारे के नज़दीक महाबलेश्वर से निकलकर भीमा, तुंगभद्रा आदि नदियों को जो पश्चिमी घाट के पहाड़ों से निकली हैं लेती हुई ७ सौ मील बहकर मछलीबंदर के नज़दीक समुद्र से मिल गई है (कावेरी) नीलगिर में उतकमन्द से निकलकर ४ सौ मील बहकर त्रिचनापली से आगे समुद्र में खप गई है (महानदी) नागपुर की अमलदारी से निकलकर ५ सौ मील बहकर कटक के पास कई एक धारों से बंगाले की खाड़ी में गिरी है। हिन्दुस्तान में मशहूर झीलें ४ हैं १ (चिलका झील) जो उड़ीसा झीलें में कटक के पास है इसकी लम्बाई ३४ मील और चौड़ाई ८ मील पानी खारी और इस में हर एक बरस क़रीब २ लाख मन के निमक पैदा होता है २ (पलियाकट) जो कर्णाटक के इलाक़े में है लम्बाई इसकी ४६ मील और चौड़ाई १४ मील ३ (सांभर झील) यह जोधपुर और जयपुर के राज्य के बीच में है लम्बाई इसकी २० मील और चौड़ाई २ मील है इसी झील से सांभर निकाली जाती है ४ (उलर झील) यह कश्मीर के इलाक़े में है इसकी लम्बाई १६

मील और चौड़ाई ८ मील और इतनी गहरी है कि आज तक किसी ने थाह नहीं पाई ॥

खाड़ी हिन्दुस्तान में ४ खाड़ा हैं १ (बंगाले की खाड़ी) पूर्व में २ (मनार की खाड़ी) दक्षिण में ३ (खंभात की खाड़ी ४ कच्छ की खाड़ी) ये दोनों पश्चिम में हैं ॥

बिभाग भूगोलज्ञों ने भरतखण्ड के ४ खण्ड किये हैं १ (खण्ड) हिमालय पर्वत से शवालक पर्वत तक जिसको औत्तरीय भरतखण्ड कहते हैं। इस खण्ड की पृथ्वी दक्षिण और पूर्व को ढुलवां है २ (खण्ड) शवालक और बिंध्याचल के बीच में जिसको मुख्य हिन्दुस्तान वा मध्य हिन्दुस्तान कहते हैं इस हिस्से की ज़मीन १३ सौ फुट से २५ सौ फुट तक समुद्र के तल से ऊंचा है ३ (खण्ड) बिंध्याचल से कृष्णा नदी तक जिसको ठेठ दक्षिण कहते हैं इस हिस्से की ज़मीन दक्षिण की ओर को ढुलवां और मध्य हिन्द की तरह समुद्र के तल से ऊंची है ४ (खण्ड) कृष्णा नदी से मनार की खाड़ी तक है इस खण्ड को दाक्षिणीय हिन्दुस्तान वा प्रायद्वीप कहते हैं यहां की ज़मीन भी मध्य हिन्द के तरह समुद्र की तल से ऊंची है परंतु घाट और समुद्र के बीच की ज़मीन निचाई में है ॥

हिन्दुस्तान बादशाही वक़्त में १६ सूबों पर विभाग किया गया था जिन में से बंगाला, बिहार, इलाहाबाद, अवध, आगरा, देहली, मालवा, गुजरात,

अजमेर, सिंधु, लाहौर, मुलतान ये १२ सूबे मध्य हिन्द में गिने जाते थे और उड़ीसह, सरकार, बरार, खान्देश, बीजापुर, औरंगाबाद हैदराबाद ये ७ सूबे दक्षिण में और सिवाय इनके कश्मीर, क़ंधार, काबुल भी हिन्दुस्तान में गिने जाते थे॥

जितना देश महारानी विक्टोरिया के अधिकार में है उसके ३ अहाते वा ३ प्रेज़ीडेन्सी इस तरह पर अहाते नियत हैं १ (बंगाल अहाता) चटगांव से पेशावर तक २ (मंदराज अहाता) गंजाम से हुनोवर तक ३ (बम्बई अहाता) धारवाड़ से शिकारपुर तक परंतु इन में से बंगाल अहाता ४ लोकल गवर्नमेंट में इस क्रम से बटा है १ गवर्नमेंट ठेठ बंगालह चटगांव से शाहाबाद तक २ पश्चिमोत्तर देश और अवध ग़ाज़ीपुर से मेरठ तक जिसका बर्णन पहले हो चुका है ३ पंजाब देहली से पेशावर तक और अवध की चीफ़ कमिश्नरी इलाहाबाद की क़िस्मत के उत्तर में ४ मध्य हिन्द की चीफ़ कमिश्नरी सागर से बस्त्र तक। इन चारों में से मध्य हिन्द के बड़े हाकिम चीफ़ कमिश्नर कहलाते हैं और बाक़ी के लेफ़्टिनेंट गवर्नर और सब अहातों के बड़े हाकिम को गवर्नर जनरल कहते हैं जिनका राजस्थान कलकत्ता है। हर एक अहाते में एक २ कौंसिल याने व्यवस्थापकों की सभा और एक २ हैकोर्ट याने सब से बड़ी सभा अपील सुन्ने के लिये अलग २ मुक़र्रर है॥

बंगाले की गवर्नमेंटी का बयान

बंगाले की गवर्नमेंटी के उत्तर में भुटराट, शिकम, नैपाल का राज्य और दक्षिण में बंगाले की खाड़ी और मंदरास अहाता और पूर्व में ब्रह्मा का देश और पश्चिम में पश्चिमोत्तर देश और मध्य हिन्द। बंगाले की गवर्नमेंटी में ३८ ज़िले आईनी और १० ग़ैर आईनी हैं॥

आइनी ज़िलों का बर्णन

ज़िले का नाम	ज़िले का पता	मुख्य स्थान	नदी जिसके किनारे मुख्य स्थान है
२४ पर्गनह	सुंदर बन के उत्तर में ..	कलकत्ता ..	हुगली
होरा ..	२४ पर्गने के पश्चिम में	होरा ..	0
वारासत ..	२४ पर्गने के उत्तर में ..	वारासत ..	0
नदिया ..	वारासत के उत्तर में ..	किशन नगर	0
जसर ..	नदिया के पूर्व में ..	मुर्ली ..	0
बाक़रगंज ..	तगार के पूर्व में ..	बेरीसाल ..	0
नाऊकोली ..	बाक़रगंज के पूर्व में ..	वल्वा ..	मेघना
ढाका जलालपुर ..	बाक़रगंजकेत्तउरमें ..	फ़रीदपुर ..	0
ढाका ..	बाक़रगंज के ईशान में	ढाका ..	बूढ़ीगंगा
तरपड़ा ..	ढाके के पूर्व में ..	कोमेला ..	गोमती
चटगांव ..	तरपड़ा के आग्नेय में ..	इस्लामाबाद	करनफूला
सिलहट ..	तरपड़ा के उत्तर में ..	सिलहट ..	0
कचार ..	सिलहट के पूर्व में ..	सिलचार ..	बारक

ज़िले का नाम	ज़िले का पता	मुख्य स्थान	नदी जिसके किनारे मुख्य स्थान है
मैमनसिंह ..	सिलहट के पश्चिम में	सूदार ..	ब्रह्मपुत्र
पबना ..	जसर के उत्तर में ..	पबना ..	0
राजशाही ..	पबना के वायव्य में ..	बोलिया ..	गंगा
बगड़ा .	राजशाही के ईशान में	बगड़ा ..	0
रंगपुर ..	बगड़ा के उत्तर में ..	रंगपुर ..	0
दीनाजपुर ..	रंगपुर के पश्चिम में ..	दीनाजपुर ..	पूर्णबाबा
पुरनियां ..	दीनाजपुर के पश्चिम में	पुरनिया ..	0
माल्दा ..	पुरनिया के दक्षिण में ..	माल्दा ..	महानदी
मुर्शदाबाद ..	माल्दा के दक्षिण में ..	मुर्शदाबाद	भागीरथी
बीरभूम ..	मुर्शदाबाद के पश्चिम में	सेबड़ी .	0
बर्दवान ..	बीरभूम के दक्षिण में	बर्दवान ..	0
हुगली ..	बर्दवान के आग्नेय में	हुगली ..	भागीरथी
मेदनीपुर ..	हुगली के नैऋत में ..	मेदनीपुर ..	0
बालेश्वर ..	मेदनीपुर के दक्षिणमें ..	बालेश्वर ..	बूढ़ीबलंग
कटक ..	बालेश्वर के दक्षिणमें ..	कटक ..	महानदी
बरदा ..	कटक के दक्षिण में ..	जगन्नाथ	समुद्र के किनारे
बगड़ा ..	बर्दवान के पश्चिम में ..	बगड़ा ..	0
भागलपुर ..	मुर्शदाबाद केवायव्य में	भागलपुर ..	गंगा
मुंगेर ..	भागलपुर के पश्चिम में	मुंगेर ..	गंगा
बिहार ..	मुंगेर के पश्चिम में ..	गया ..	फल्गू
पटना ..	बिहार के वायव्य में ..	पटना ..	गंगा

ज़िलेकानाम	ज़िले का पता	मुख्य स्थान	नदी जिसके किनारेमुख्य स्थान
तिरहुत ..	मुंगेर के वायव्य में ..	मुज़फ़्फ़रपुर ..	0
शाहाबाद..	पटने के पश्चिम में ..	आरा ..	0
सारन ..	शाहाबाद के उत्तर में..	छपरा ..	0
चम्पारन ..	सारन के उत्तर में ..	मोतीहारी ..	0

गै़र आईनी ज़िलों का वर्णन

क़िस्मत का नाम	ज़िले का नाम	ज़िले का पता	मुख्य स्थान
आसाम की क़िस्मत	गोहाट ..	सिलहट के उत्तर में ..	गोहाट ..
	नौगांव ..	गोहाट के पूर्व में ..	नौगांव ..
	तेजपुर ..	नौगांव के उत्तर में ..	तेजपुर ..
	ग्वालपाड़ा..	गोहाट के पश्चिम में..	ग्वालपाड़ा..
	शिवपुर ..	नौगांव के उत्तर में ..	शिवपुर ..
	लखमपुर ..	शिवपुर के उत्तर में ..	लखमपुर ..
छोटे नागपुर की क़िस्मत	छोटा नागपुर	बीरभूम और बिहार के दक्षिण में	लोहारू का
	मानभूम ..	छोटेनागपुर के पूर्व में ..	बुरलिया
	हज़ारीबाग़	छोटे नागपुर के उत्तर में	हज़ारीबाग़
	बाजगुज़ार मुहाल	कटक और बालेश्वर के पश्चिम में	बाजगुज़ार मुहाल

(प्रगट) हो कि कलकत्ता बंगाले की गवर्नमेंट का ख़ास शहर और कुल हिन्दुस्तान की राजधानी है। नदियों के ज़िलों

में प्लासी गांव है जहां लार्ड कलाऊ साहिब ने सन् १७५७ ई० में शराजुद्दौलह बंगाले के नव्वाब को परास्त किया था। जसर के ज़िले में सुन्दर बन है। सेवड़ी से ६० मील वायव्य में झाड़खंड के बीच देवगढ़ में बैजनाथ महादेव का मशहूर मंदिर है। पुरी जगन्नाथ हिन्दुओं का मशहूर तीर्थस्थान है इस में श्रीजगन्नाथ जी का मंदिर २२५ गज़ लम्बा और इतना ही चौड़ा हिन्दुओं का पूज्यस्थान है। भागलपुर से ६० मील पर राजमहल है। गया हिन्दुओं का तीर्थस्थान है। बिहार के दक्षिणी हिस्से को संस्कृत में मगध देश और उत्तर के हिस्से को मिथिला देश लिखा है। बिहार से १६ मील दक्षिण को राजगढ़ जरासिंधु का पुराना राज्यस्थान था। हिन्दुओं के वक़्त में पटना मगध देश और हिन्दुस्तान भर की राजधानी था। पटने के नज़दीक दानापुर की छावनी है। आरे से २५ कोस पश्चिम को बक्सर का क़िला है और शोण नदी के किनारे रुहितास का क़िला ऊजड़ पड़ा है॥

पंजाब की गवर्नमेंटी का बयान

पंजाब की गवर्नमेंटी के उत्तर और पूर्व में कश्मीर का राज्य और आग्नेय में पश्चिमोत्तर सूबा और ठेठ दक्षिण में राजपूताना दाऊदपुत्रा, सिंधु की क़िस्मत और पश्चिम में अफ़गानिस्तान, सीस्तान। ठेठ पंजाब वह है जो सतलज और सिंधुनदी और हिमालय पर्वत के बीच है। यहां सिक्ख लोग बस्ते हैं और ये लोग बाल नहीं मुंड़वाते और गुरू नानक के मत पर चलते हैं। पहिले पंजाब सिक्खों के अधिकार में था और अब अंगरेज़ों के अधिकार में है। पंजाब में अन्न बहुतायत से पैदा होता है और ईख और मेवा भी होते हैं

पंजाब की गवर्नमेंटी में १० क़िस्मतें, ३२ ज़िले इस क्रम से हैं

क़िस्मत के नाम	ज़िलों के नाम जो क़िस्मत में हैं
देहली ..	देहली, कर्नाल, गुरगांवा
हिसार ..	हिसार, सिरसा, रुहतक
अम्बाला ..	अम्बाला, थानेसर, लुधियाना, शिमला
अमृतसर ..	अमृतसर, गुरदासपुर, स्यालकोट
जालंधर ..	जालंधर, हुशियारपुर, कांगड़ा
लाहौर ..	लाहौर, गुजरानवाला, फ़ीरोज़पुर
झेलम ..	झेलम, शाहपुर, गुजरात, रावलपिण्डी
मुल्तान ..	मुल्तान, पाकपट्टन, झंग, मुज़फ़्फ़रगढ़
देरहजात ..	देरह, इस्माईलख़ां, देरह, ग़ाज़ीख़ां, बन्नू
पेशावर ..	पेशावर, कोहाट, हज़ारह

पाकपट्टन के ज़िलेका ख़ास शहर फ़तहपुर गोगीरा है और बाक़ी ज़िलों और किस्मतों की ख़ास जगह उसी ज़िले वा क़िस्मत के नाम से मशहूर है। पंजाब के नगरों में से देहली पुराना शहर यमुना के दाहिने किनारे है यह शहर हिन्दुओं और मुसलमानों के वक़्त में अकसर हिन्दुस्तान का राज्यस्थान रहा और यह शहर निहायत ख़ूबसूरत है और यहां की जुमा मसजिद और लाल क़िला और कुतुब साहिब का रौज़ा देखने के लायक़ हैं। गुरगांवा एक छोटासा क़सबा है यहां पर चैत्र के महीने में देवी की पूजा के लिये दूर दूर के लोग आते हैं गुरगांवे के ज़िले में रेवाड़ा बड़ा क़सबा है। हिसार को हरयाना और थानेसर को कुरुक्षेत्र कहते हैं

शिमले से २७ मील पर सपाटू गोरों की छावनी का स्थान है। अमृतसर बड़ा भारी शहर है यहां का गुरुद्वारा देखने के लायक़ है। स्यालकोट की छावनी मशहूर है। कांगड़े को नगरकोट भी कहते हैं यह शहर छोटे से पर्वत पर बसा है महामाया का यहां मन्दिर है यहां से २५ मील व्यास के पार ज्वालामुखी पहाड़ है। लाहोर पंजाब की गवर्नमेंटी का ख़ास शहर रावी के बांए किनारे पर बड़ा भारी शहर है। और यहां का क़िला और वज़ीरख़ां की मस्जिद और सुनहरी मस्जिद बहुत मशहूर और देखने के लायक़ हैं। लाहोर के नज़दीक शाहदारे में जहांगीर का रौज़ा है। गुजरानवाला ज़िले में वज़ीराबाद चिनाब के बाएं किनारे पर बड़ा शहर है। झेलम के ज़िले में रुहतास का पुराना क़िला और पिंडदादनख़ां बड़ा क़सबा है इस क़सबे के नज़दीक लाहोरी निमक की खानि है। रावलपिंडी के ज़िले में सिन्धनदी के किनारे पर अटक का मशहूर क़िला है और क़िले के नज़दीक अटक शहर बसा है। देरा इस्माइलख़ां के ज़िले में लाहोरी निमक का पहाड़ है। हिन्दुस्तान की पश्चिमी सीमा पर पेशावर शहर है यहां की छावनी बहुत बड़ी है और पेशावर से १५ मील पर ख़ैबर की घाटी है। कोहाट के ज़िले में एक तरह का पत्थर होता है जिसको पानी में उबाल कर मोमियाई बनाते हैं॥

अवध का बयान

अवध के उत्तर में नेपाल का राज्य और दक्षिण में गंगा नदी, पूर्व में गोरखपुर का ज़िला और पश्चिम में रुहेलखंड की क़िस्मत। इस की ज़मीन बहुत उपजाऊ है पहिले यह देश अवध के बादशाह के अधिकार में रहा अब अंगरेज़ों के अधि-

कार में है यहां ईख और चांवल अच्छे और बहुतायत से होते हैं ॥

अवध में ४ क़िस्मतें और १२ ज़िले इस क्रम से हैं ॥

क़िस्मत का नाम	ज़िलों के नाम जो क़िस्मत में हैं		
लखनऊ ..	लखनऊ,	उनाउ,	बारहबंकी
फ़ैज़ाबाद ..	फ़ैज़ाबाद,	बहराइच,	गोंड़ा
बैसवाड़ा ..	रायबरेली,	सुलतापुर,	प्रतापगढ़
सीतापुर ..	सीतापुर,	खैरी,	हरदुई

बैसवाड़े की क़िस्मत की ख़ास जगह रायबरेली और ख़ैराबाद की क़िस्मत का सीतापुर है बाक़ी क़िस्मतों और ज़िलों की ख़ास जगह क़िस्मतों और ज़िलों के नाम से मशहूर हैं ॥

लखनऊ अवध की ख़ास जगह गोमती नदी के दाहने किनारे पर है यह शहर बहुत बड़ा और रमणीक है इस शहर में शीशमहल हुसैनाबाग़ मार्टीन साहिब की कोठी आसफ़ुद्दौलह का इमामबाड़ा देखने लायक़ हैं और लखनऊ की क़िस्मत में नव्वाबगंज बड़ा क़सबा है और फ़ैज़ाबाद शहर के नज़दीक पुराना शहर अयोध्या है जिस में बंदर बहुत हैं ॥

इन शहरों के सिवाय जिनके नाम से ज़िले मशहूर हैं अवध में मुहम्मदी, मुल्लापुर, सिलोन ख़ास शहर हैं ॥

मध्यहिन्द की चीफ़ कमिश्नरी का बयान

मध्यहिन्द के उत्तर में बुंदेलखण्ड और दक्षिण में हैदराबाद का राज्य और पूर्व में बंगाले की लेफ़्टिनेंटी और पश्चिम में भूपाल का राज्य और बरार है ॥

मध्य हिन्द में ४ क़िस्मतें और १० ज़िले इस क्रम से हैं

क़िस्मत का नाम	ज़िलों के नाम जो क़िस्मत में हैं
सागर ..	सागर, दमोह, हुशंगाबाद, बेतौल
जब्बलपुर ..	जब्बलपुर, मंडला, सिउनी
नागपुर ..	नागपुर, भंडारा, चांदा, बरदा
रायपुर अर्थात् छत्तीसगढ़	रायपुर, सम्भलपुर, बिलासपुर, अय्यर, गोदावरी

मध्यहिन्द की चीफ़ कमिश्नरी की ख़ास जगह नागपुर है और बाक़ी क़िस्मतों और ज़िलों की ख़ास जगह उन्हीं क़िस्मतों और ज़िलों के नाम से मशहूर हैं। नागपुर की क़िस्मत में हींगन घाट और रायपुर की क़िस्मत में बस्तर बड़ा क़सबा है॥

मंदराज अहाते का बयान

मंदराज के उत्तर में बंगाले की लेफ़्टिनेंटी मध्यहिन्द हैदराबाद का राज्य, गवा का इलाक़ा और दक्षिण में हिन्द महासागर और पूर्व में बंगाले की खाड़ी और पश्चिम में मैसूर और त्राविणकोर का राज्य और अरब का समुद्र है॥

मंदराज अहाते में २३ ज़िले इस क्रम से हैं

ज़िले का नाम	ज़िले का पता	ख़ास शहर	नदी जिसके किनारे ख़ास शहर है
गंजाम ..	कटक के दक्षिण में ..	गंजाम	समुद्र के किनारे
बिजगापट्टन	गंजाम के नैऋत में ..	बिजगापट्टन	तथा
राजमहेंद्री ..	बिजगापट्टन के नैऋत में	राजमहेंद्री	गोदावरी
मछलीबंदर ..	राजमहेंद्री के नैऋत में	मछली बंदर	समुद्र के किनारे
गंटूर ..	मछलीबंदर के नैऋत में	गंटूर ..	0
निलौर ..	गंटूर के दक्षिण में ..	निलौर ..	पन्ना
कड़प ..	निलौर के पश्चिम में ..	कडप ..	कड़प
बलारी ..	कड़क के वायव्य में ..	बलारी ..	हुगली
चितौड़ ..	कड़क के दक्षिण में ..	चित्तौड़ ..	0
अर्काट ..	तथा	अर्काट ..	पालारा
चेंगलपट्टू ..	निलौर के दक्षिण में ..	चेंगलपट्टू ..	0
शेलम ..	अर्काट के नैऋत में ..	शेलम ..	0
चिचनापली ..	शेलम के आग्नेय में ..	चिचनापली	कावेरी
तंजावर ..	चिचनापली के पूर्व में ..	तंजावर ..	0
कंबूकोनम ..	तंजावर के पूर्व में ..	नागौर वा नगर	समुद्र के किनारे
मथुरा ..	तंजावर के नैऋत में ..	तहोरी ..	वियागसू
तिरनी-लोवनो	मथुरा के नैऋत में ..	तिरनी लोवनी	0

ज़िलेकानाम	ज़िले का पता	ख़ास शहर	नदी जिसके किनारे ख़ास शहर है
कोयमतूर ..	मथुरा के वायब्य में ..	कोयमतूर	0
मलेवार ..	कोयमतूर ने में ..	कोची ..	समुद्र के किनारे
कल्लीकोट ..	मलेवार के उत्तर में ..	कल्लीकोट ..	तथा
तेलीचरी ..	कल्लीकोट के उत्तर में .	तेलीचरी ..	समुद्र के किनारे
किनारा ..	तेलीचरी के उत्तर में ..	मंगलूर ..	तथा
हुनोबर ..	किनारे के उत्तर में ..	हुनोवर	0

चेंगलपट्टू के ज़िले में समुद्र के किनारे पर मंदराज शहर जिसको चीनापट्टन भी कहते हैं इस अहाता का ख़ास शहर है मंदराज का क़िला जिसका नाम फ़ोर्टसेंट जार्ज है बहुत मज़बूत बना है। बलारी से वायब्य में तुंगभद्रा नदी के किनारे पर विजयनगर नाम प्राचीन शहर ऊजड़ पड़ा है। अर्काट शहर कर्नाट के सूबे का पुराना ख़ास शहर था और अर्काट से ८५ मील आग्नेय में कड़ालूर बंदर है। तंजावर के इलक़ा को संस्कृत में चोल देश कहते हैं। मदौरा से ८५ मील आग्नेय दिशा में रामेश्वर नाम टापू है जिस में सेतुबंधरामेश्वर महादेव का मंदिर बहुत बड़ा पुराने वक़्त का बना हुआ है इन महादेव जी के ऊपर गंगाजल ही चढ़ाया जाता है। तिरुलोचनी से पूर्वी समुद्र के किनारे तूतिकोरिन में डुबकी मारनेवाले सीप से मोती निकालते हैं। कोयमतूर से ४० मील उत्तर और पश्चिम को

नीलगिरि पर्वत पर उत्कमन्द अंगरेज़ों के हवा खाने की जगह है। शेलम से कोयमतूर तक ७ ज़िले द्राविड देश कहलाते हैं। मलेबार को चियाराज और केरल देश भी कहते हैं॥

बम्बई अहाते का बयान

बम्बई के उत्तर में मिट्ठन कोट और दक्षिण में मंदराज अहाता मैसूर का राज्य और पूर्व में हैदराबाद का राज्य इन्दौर, मारवाड़, जैसलमेर के राज्य और पश्चिम में बिलोचिस्तान, कच्छ का राज्य गुजरात अरब का समुद्र। बम्बई अहाते में १५ आईनी ज़िले और एक सिंध की क़िस्मत ग़ैर आईनी हैं॥

ज़िले का नाम	ज़िले का पता	ख़ास शहर	नदी जिसके किनारे ख़ास शहर है
धारवाड़ ..	गवा के पूर्व में ..	धारवाड़ वा नसीराबाद	
बेलगांव ..	धारवाड़ के वायव्य में ..	बेलगांव	
कोकन ..	बेलगांव के वायव्य में ..	रत्नागिरि ..	समुद्र के किनारे
थाना ..	कोकन के उत्तर में ..	थाना	
बम्बई ..	सास्टी टापू के दक्षिण में	बम्बई ..	समुद्र के किनरे
पूना ..	थाने के पूर्व में ..	पूना	
सितारा ..	पूना के दक्षिण में ..	सितारा	
शोलापुर ..	सितारे के पूर्व में ..	शोलापुर	

ज़िले का नाम	ज़िले का पता	ख़ास शहर	नदी जिसके किनारे ख़ास शहर है
अहमदनगर	पूना के ईशान में ..	अहमदनगर	०
नासिक ..	अहमदनगर के वायव्य में	नासिक ..	गोदावरी
ख़ानदेश ..	नासिक के उत्तर में ..	धूलिया ..	पूजरानदी
सूरत ..	ख़ान्देश के पश्चिम में ..	सूरत ..	ताप्ती
भरौंच ..	सूरत के उत्तर में ..	भरौंच ..	नर्मदा
खेड़ा ..	भरौंच के उत्तर में ..	खेड़ा ..	०
अहमदाबाद	खेड़े के उत्तर में ..	अहमदाबाद	सामरमती

सिंधु की ग़ैर आईनी क़िस्मत ॥

हैदराबाद ..	जैसलमेर के पश्चिम में	हैदाराबाद ..	सिंधु नदी
किरांची	हिन्दुस्तान की पश्चिमी सीमा पर	किरांची	समुद्र के तट पर
शिकारपुर	हैदराबाद के उत्तर में	शिकारपुर ..	०

थोड़े दिन से पूना शहर इस अहाते का ख़ास शहर है पहिले इस में बम्बई शहर था बम्बई का ज़िला एक टापू है जिस में बम्बई शहर बस्ता है और इसके उत्तर में सास्टीनाम टापू है पर दोनों के बीच में एक बन्ध बंधा हुआ है इस सबब से दोनों टापू एक हो गये हैं। बम्बई का क़िला बहुत मज़बूत बना है बम्बई के ज़िला से ७ मील पर और कोकन के किनारे से ५ मील पर गोरापुरी नाम टापू है जिसको अंगरेज़ ऐलीफ़ेंटा आयल कहते हैं। गवा के दक्षिण में सदाशिव गढ़ एक नया बंदर मुक़र्रर हुआ है यहां जहाज़

का असबाब उतरता है और यहां से रेल की राह मंदराज को जाती है। सितारे से पश्चिम को पंडरपुर हिन्दुओं का तीर्थ स्थान है। बादशाही वक़्त में ख़ान्देश और कई ज़िलों को मिलाकर एक सूबा था। धारवाड़ से सूरत तक के १२ ज़िलों को शास्त्र में महाराष्ट्र देश याने मरहटों का देश लिखा है। अहमदाबाद बादशाही वक़्त में गुजरात के सूबा का ख़ास शहर था। सिंधु की क़िस्मत का मुख़तसर बयान इस तौर पर है। यह देश सिंधु नदी के दोनों ओर दाऊदपुत्रा के राज्य तक चला गया है यह देश पहले एक अमीर के अधिकार में था अब अंगरेज़ों के अधिकार में है इस देश याने सिंधु की क़िस्मत का ख़ास शहर हैदराबाद है हैदराबाद के उत्तर २०० मील पर सिंधु नदी के एक टापू में भक्कर का क़िला है और क़िले के दोनों ओर सिंधु नदी के दोनों किनारे पर रोड़ी और शक्कर दो शहर बस्ते हैं। शिकारपुर बड़े व्योपार की जगह है और इन शहरों के सिवाय सिंधु देश में ख़ैरपुर, अमरकोट, ठट्ठा बड़े शहर हैं और अमरकोट में अकबर बादशाह पैदा हुआ था॥

हिन्दुस्तानी राज्यों का बयान

हिन्दुस्तान के जितने हिस्से में अंगरेज़ों का राज्य है याने जिसका रुपया अंगरेज़ी ख़ज़ाने में आता है और जहां दीवानी और फ़ौजदारी कचहरी सरकार की तरफ़ से होती हैं उस हिस्से का बयान तो हो चुका अब बाक़ी हिन्दुस्तानियों के अधिकार में है॥

हिन्दुस्तान में सब ६३ राज्य हैं जिन में से ११ तो हिन्दुस्तान के उत्तर में और ४६ मध्य हिन्द में और ६

दक्षिण याने नर्मदा नदी के दक्षिण में जैसा कि हर एक राज्य का बयान नीचे लिखे हुए नक़शे से मालूम होगा ॥

उत्तरीय हिन्दुस्तान के राज्यों का बयान

राज्य का नाम	राज्य का पता	ख़ास शहर	बरसौढ़ी कर
भुटंट ..	आसाम की क़िस्मत के उत्तर में ..	तशीशूदन	
शिकम ..	भुटंट के पश्चिम में ..	शिकम	
नैपाल ..	अवध के उत्तर में ..	काठमांडू	३२०००००
गढ़वाल	गंगा और यमुना के बीच में ..	टेहरी	१०००००
सर्मौर	ये तीनों पहाड़ी राज्य	पाहिन	१०००००
कोहलूर	सतलज और यमुना	बिलासपुर	१०००००
बिसाहर	के बीच में हैं	रामपुर	१०००००
सुकेत	ये तीनों राज्य कश्मीर	सुकेत	८००००
मंडी	से आग्नेय दिशा में	मंडी	३५००००
चम्बा	सतलज और चिनाब के बीच में हैं	चम्बा	१०००००
कश्मीर	राबी और सिंध के बीच में	जम्बू	२५०००००

मध्य हिन्द के राज्य

राज्य का नाम	राज्य का पता	ख़ास शहर	बरसौढ़ी कर
बघेलखंड	मिर्ज़ापुर के दक्षिण में	रीवां ..	२000000
अर्छा		टेहरी	७00000
दतिया		दतिया	९000000
चारखारी	अर्छा से बिजावर तक	चारखारी	४00000
छत्रपुर	८ राज्य बुंदेलखंड में	छत्रपुर	३00000
अजयगढ़	गिने जाते हैं और बघे-	अजयगढ़	३२५000
पन्ना	लखंड के राज्य के	पन्ना	४0000
समथर	पश्चिम में हैं ॥	समथर	४५0000
बिजावर		बिजावर	३२५000
ग्वालियर वा सेंधिया का राज्य	बुंदेलखंड और भूपाल के पश्चिम है	ग्वालियर ..	८७00000
भूपाल	उत्तरदक्षिण पश्चिम मेंग्वालियरकाराज्य	भूपाल ..	२२00000
इंदौर वा हुलकर का राज्य	ग्वालियर के पश्चिम और दक्षिण में ..	इंदौर ..	२२00000
धार ..	ग्वालियर के राज्य से घिरा हुआ	धारा नगर	४७५000
देवास	तथा	देवास	४00000

राज्यका नाम	राज्य का पता	ख़ास शहर	बरसैाढ़ी कर
बरैादह वा गायक्रवाड़ का राज्य	ग्वालियर और इंदैार के राज्य के पश्चिम में	बरैादह ..	७०००००
कच्छ	बरैादह के राज्य के वायव्य में ..	भोज ..	८०००००
सिरोही ..	बरैादह के राज्यके पूर्ब में	सिरोही ..	१०००००
उदयपुर वा मेवाड़ ..	सिरोही और जोधपुर के राज्य के पूर्व में	उदयपुर ..	१२५००००
डूंगरपुर ..		डूंगरपुर ..	आमदनी तीनो की २०००००
प्रतापगढ़ ..		प्रतापगढ़ ..	
बांसबाड़ा ..		बांसबाड़ा ..	
बूंदी ..	उदयपुर के पूर्व में ..	बूंदी ..	१००००००
कोटा ..	बूंदी के दच्चिण में ..	कोटा ..	३५०००००
टोंक ..	बूंदी के उत्तर में ..	टोंक ..	१००००००
जैपुर वा ढूंढार	अलवर और बीकानेर के दच्चिण में ..	जैपुर ..	८५०००००
करैाली ..	जैपुर केदच्चिण औरपूर्ब में	करैाली ..	५०००००
घोलपुर ..	करैाली के पूर्व में ..	घोलपुर ..	७०००००
भरतपुर ..	घोलपुर के उत्तर में ..	भरतपुर ..	२००००००
अलवर वा माचेरी	जैपुर के पूर्व में ..	अलवर ..	१८०००००
किशनगढ़ ..	जैपुर के उत्तर में ..	किशनगढ़ ..	३०००००

राज्य का नाम	राज्य का पता	ख़ास शहर	बरसौढ़ी कर
जोधपुर वा मारवाड़	ग्वालियर और जैसलमेर के पूर्व में	जोधपुर ..	१०00000
बीकानेर	जोधपुर और जैपुर के उत्तर में	बीकानेर ..	६५0000
जैसलमेर ..	बीकानेर के पश्चिम में	जैसलमेर ..	१00000
दाऊद पुत्रा	जैसलमेर और बीकानेर के उत्तर में	भावलपुर ..	१५00000
पटियाला ..	यह ८ राज्य दाऊद पुत्रा के पूर्व और बीकानेर के राज्य के उत्तर और पूर्व में हैं और अजमेर के रेजीडेंट के आधीन हैं	पटियाला ..	२000000
नाभा ..		नाभा ..	३00000
जींद ..		जींद ..	३00000
मालियर कोटला		मालियर कोटला	३00000
फ़रीदकोट		फ़रीदकोट	इसकी आमदनी थोड़ी सी कम है परंतु निश्चय नहीं
ममदूड़ ..		ममदूड़ ..	
बुढ़िया ..		बुढ़िया ..	
छजरौली ..		छजरौली ..	
रायकोट ..		रायकोट ..	
कपूरथला ..	सतलज और ब्यास के बीच	कपूरथला ..	२00000
रामपुर	बरेली और मुरादाबाद के बीच में	रामपुर ..	१000000
मनीपुर ..	ब्रह्मपुत्र के पार हिन्द की पूर्वी सीमा पर	मनीपुर ..	१00000

नर्मदा के दक्षिणीय राज्य

राज्य का नाम	राज्य का पता	ख़ास शहर	बरसौढ़ी कर
हैदराबाद··	मध्य हिन्द के दक्षिण में	हैदराबाद	१५00000
मैसूर ··	हैदराबाद के दक्षिण में	मैसूर	९00000
कोचीं	मैसूर के दक्षिण समुद्र के किनारे	कोची	५00000
त्रावणकोर··	कोची के दक्षिण में	त्रीविंद्रम	४000000
कोलापुर ··	हैदराबाद के पश्चिम में	कोलापुर	१५00000
सावंतबाड़ी	कोलापुर के दक्षिण और पश्चिम में	बाड़ी	२00000

शिक्कम के दक्षिण में दार्ज़ीलिंग अंगरेज़ों के हवा खाने की जगह है। नैपाल के राज्य में मशहूर शहर गोरखाखाची, देयाल हैं। कश्मीर के राज्य में लद्दाख़ देश जो हिन्दुस्तान की हद्द से बाहर और तिब्बत देश का एक हिस्सा मिला हुआ है इस सबब बरसौढ़ी कर कश्मीर का एक किरोड़ रुपया है। ग्वालियर के राज्य में उज्जैन बुरहानपुर भेलसे की छावनी है। इन्दौर. शहर के पास मऊ की छावनी है। बरौदह के राज्य में बहुतसा हिस्सा गुजरात देश का मिला हुआ है इस राज्य की पश्चिमी हद्द पर द्वारिका का टापू है जिसको जगत भी कहते हैं और पश्चिम और दक्षिण की ओर भूनागढ़ के नव्वाब की जागीर में पट्टन शहर है जिस

में सोमनाथ का मंदिर है। कच्छ के पश्चिमी हिस्से का नाम कच्छ और उत्तरीय हिस्से को रनकच्छ कहते हैं जो भील और दलदल से भरा हुआ है। सिरोही से जैसलमेर तक १७ राज्य राजपूताने में गिने जाते हैं और अजमेर के रज़ीडेंट के आधीन हैं। सिरोही से २८ मील दक्षिण और पश्चिम को आबू का पहाड़ है जिसको संस्कृत में अरबुद पर्वत कहते हैं इस पहाड़ पर आसपास के अंगरेज़ गरमी में हवा खाने जाते हैं। उदयपुर का राणा सारे हिन्दुस्तान के राजाओं से बड़ा गिना जाता है उदयपुर से पूर्व को चितौड़ गढ़ है। बूंदी में मंदिर बहुतायत से हैं। कोटे से ५० मील दक्षिण को झालरापाटन शहर है। जैपुर के दक्षिण और पूर्व में रणथम्भौर का क़िला है। भरतपुर से ८ मील पर डीग शहर है। अलवर के दक्षिण में मानचेरी शहर है। जोधपुर के राज्य में नागपुर के बैल मशहूर हैं। बीकानेर के राज्य में मशहूर शहर भटनेर है दाऊदपुत्रा के राज्य में मशहूर शहर ड्रावल मबुलपुर है। पटियाले के नज़दीक सरहिन्द पुराना शहर और आग्नेय दिशा में बिटंडे का क़िला है। हैदराबाद के राज्य में औरंगाबाद, दौलताबाद, बिदर, नांदेर मशहूर शहर हैं। हैदराबाद के नज़दीक गोलकुंडे का क़िला है हैदराबाद से ३ मील उत्तर को सिकन्दराबाद में अंगरेज़ी फ़ौज की बहुत बड़ी छावनी है इस राज्य के मालिक निज़ामुलमुल्क ने अपने राज्य का उत्तरीय हिस्से बरार का इलाक़ा फ़ौज के ख़र्च के बदले में सरकार को सौंप दिया है। मैसूर के राज्य में श्रीरंगपट्टन जो टीपूसुल्तान के वक़्त में मैसूर की राजधानी था और बंगलोर, चक्रबालापुर मशहूर शहर हैं॥

और मुल्क के बादशाहों का राज्य

छिपा न रहे कि अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी राज्यों को छोड़ जिनका बयान हो चुका कुछ थोड़ीसी ज़मीन हिन्दुस्तान की फ़रांसीस, डेन्मार्क, पुर्त्तगाल, डच के बादशाहों के भी अधिकार में है अर्थात् फ़रांसीसों के अधिकार में पांडिचेरी, कारीकाल, चंद्रनगर का इलाक़ा है। पांडेचेरी शहर कावेरी नदी के मुहाने पर समुद्र के किनारे है कारीकाल तंजावर के पूर्व उत्तर को झुका हुआ समुद्र के किनारे पर है और चन्द्रनगर कलकत्ते से २० मील उत्तर को गंगा के बाएं किनारे पर है इन तीनों इलाक़ों से ३ लाख ८० हज़ार रुपये के क़रीब सालियाना आमदनी है और गवर्नर फ़रांसीसों का पांडेचेरी में रहता है। डेन्मार्क के बादशाह के अधिकार में तिरक्कमबाड़ी का इलाक़ा है और तिरक्कमबाड़ी शहर कारीकाल से ६ मील उत्तर को समुद्र के किनारे है पुर्त्तगाल के बादशाह के अधिकार में गवा का इलाक़ा है और यह इलाक़ा सावंतबाड़ी के दक्षिण और कानड़े के उत्तर को पश्चिमी घाट और समुद्र के बीच में है। इस इलाक़े की आमदनी ६ लाख रुपया साल है पुराना शहर इसका गवा था पर अब पुर्त्तगेज़ों का गवर्नर गवा से ५ मील पश्चिम समुद्र के किनारे पर पंचम नगर में रहता है और यही इस इलाक़े का राज्यस्थान हो गया है। डच के बादशाह के अधिकार में श्रीरामपुर है जो कलकत्ते के उत्तर में है। यद्यपि हिन्दुस्तान दो तिहाई के लगभग अर्थात् सात लाख मील वर्गात्मक के क़रीब हिन्दुस्तानियों के अधिकार में है परंतु बस्ती और फ़ायदे में अंगरेज़ी देश के आधे की बराबरी भी नहीं कर सक्ता। देखो जैसे अंगरेज़ी राज्य में ६ किरोड़ मनुष्य बस्ते हैं और हिन्दु-

स्तानी राज्य में सब ५ किरोड़ मनुष्य हैं और अंगरेज़ी सरकार में बसौढ़ो लब्धि ३० किरोड़ रुपया आता है और हिन्दुस्तानी राज्य में सब मिला कर ११ किरोड़ रुपया भी नहीं आता निदान यह नियत और प्रबंध का फल है ॥

गंगा के किनारे पर हरिद्वार, कनखल, गढ़मुक्तेश्वर, अनूपशहर, फ़र्रुख़ाबाद, क़नौज, कान्हपुर, इलाहाबाद, मिर्ज़ापुर, चिनार, बनारस, ग़ाज़ीपुर, दानापुर, मुंगेर, भागलपुर, राजमहल, मुर्शिदाबाद, जाफ़रगंज ये प्रसिद्ध नगर हैं यमुना के किनारे पर पानीपत, देहली, मथुरा, आगरा, बटेश्वर, काल्पी, इलाहाबाद ये शहर हैं ॥

खानि हिन्दुस्तान में जिस २ वस्तु की खानि हैं वे नीचे लिखे हुए से मालूम होंगी ॥

खानि का नाम	राज्यों वा ज़िलों का नाम जिस में खानि हैं
लोहा ..	सिलहट, कचार, बीरभूम, आसाम, सम्भलपुर, नागपुर, कच्छ, मनीपुर, मैसूर, उदयपुर, ग्वालियर
सीसा ..	अजमेर, जोधपुर, गंतूर, छोटानागपुर
कोयला ..	जब्बलपुर, सिलहट, बीरभूम, हुगली, बलेश्वर, बांगड़ा, आसाम, छोटानागपुर, बाजगुज़ार, मुहाल
भोड़ल ..	बिहार, बाजगुज़ार, मुहाल, छोटानागपुर
सुर्मा ..	सम्भलपुर, कश्मीर
स्फटिक ..	बिहार
फिटकिरी ..	शाहाबाद, कच्छ, जैपुर

खानि का नाम	राज्यों वा ज़िलों का नाम जिस में खानि हैं
पेवड़ी ..	बाजगुज़ार, मुहाल
खड़िया ..	बाजगुज़ार, मुहाल
गेरू ..	बिहार
सेंधालूण ..	पिण्डदादनख़ां
जस्त ..	उदयपुर
अक़ीक़ ..	बरौदह, बिहार
हीरा ..	गोलकुण्डा, शाहाबाद, सम्भलपुर, पन्ना, गंतूर
गंधक ..	छोटानागपुर, नेपाल
संगमर्मर ..	जोधपुर
हर्ताल ..	नेपाल
सेंदुर ..	नेपाल

आसाम की क़िस्मत और मलेवार के इलाक़े की नदियों की रेत धोने से सोना निकलता है ॥

हिन्दुस्तान के अन्नों में से चांवल बंगाले में अच्छा अन्न होता है और गेहूं पंजाब पश्चिमोत्तरदेश, मालवे में और बाजरा राजपूताने में । अन्न को छोड़ अकसर जगहों में तमाकू और आलू भी बहुतायत से पैदा होते हैं ॥

हिन्दुस्तान में रुई, नील, अफ़ीयून, खांड़, चावल, केसर, पश्मीना तिजारत की चीज़ें हैं जिन में से अफ़ीयून मालवे में और नील, चांवल बंगाले में और केसर, पश्मीना कश्मीर में और रुई पश्चिमोत्तर सूबे

में पैदा होती है और इनको छोड़कर हींग पेशावर और मुलतान में और बेदमुष्क कश्मीर में पैदा होता है और नारियल, पुंगीफल, जायफल, कालीमिर्च, इलाइची, दारचीनी, धूप ये चीज़ें दक्षिण में पैदा होती हैं। सागूदानह मलियागिर पर और कर्पूर मनीपुर में और गूगल सिंधु में और लोबान चावण कोर में और चा कांगड़े और देहरादून में पैदा होती है॥

ऋतु हिन्दुस्तान में तीन ऋतु होती हैं ग्रीष्म, बर्षा, शरद पर उत्तरीय और पश्चिमीय भाग में शरद ऋतु में सरदी ज़ियादे होती है और बाक़ी हिन्दुस्तान में पहाड़ों को छोड़ कहीं सरदी का नाम भी नहीं है॥

ज़मीन हिन्दुस्तान की ज़मीन बड़ी उपजाऊ है यहां एक बर्ष मे दो बार कहीं तीन बार खेती काटते हैं बहुधा स्थानों में खेती केवल बर्षा ही पर होती है॥

ऐसी कोई बस्तु होगी जो हिन्दुस्तान में न होती होगी॥

स्वभाव हिन्दुस्तान के आदमी दिलेर और रहम दिल होते हैं पर गरम देश के सबब अक्सर काहिल और आराम-तलब होते हैं और आपस में मेल नहीं रखते और अपना यश बढ़ाने के लिये तालाब पुल कुआ शिवाला वग़ैरः बहुत बनाते हैं और बाछ डाल कर कोई काम करना नहीं चाहते और अपना रुपया बिवाह और मरने में बहुत ख़र्च करते हैं॥

हिन्दुस्तानियों के मत शैव, शाक्त, वैष्णव, बेदांत, मत जैन हैं पर इनके गण हज़ारों हो गये हैं। इनके सिवाय इस देश में आठवें हिस्से से ज्यादे मुसलमान और हज़ारों ही ईसाई हैं॥

लंका का बयान

यह टापू हिन्दुस्तान के दक्षिण हिन्द महासागर में है। लम्बाई २७०० मील और चौड़ाई २४५ मील है और परिधि इसकी ७५० मील है। मशहूर नदी महावली गंगा। ख़ास शहर कोलंब, कांडी, बंदरगाल, रत्नपुर, जाफ़नापाटम, तिरकोमली हैं जिन में से कोलंब राजधानी है। मशहूर पहाड़ हिमालय है जिसकी एक चोटी ७½ हज़ार फ़ुट ऊंची है और इस चोटी को अंगरेज़ लोग कुल्ल आदम कहते हैं यहां एक चटान पर मनुष्य के पैर का निशान बना हुआ है जिसको वहां के लोग बुध के पैर का निशान बतलाते हैं और मुसलमान उस निशान को आदम का पैर कहते हैं और कहते हैं कि आदम इसी जगह पर आसमान से गिरे थे। यहां बुन, दारचीनी, इलाइची, कालीमिर्च, फिटकरी ये चीज़ें बहुतायत से पैदा होती हैं। हवा पानी बहुत अच्छा और ऋतु बसंत है। यहां के लोग बुध के मत पर चलते हैं। यह वही लंका है जिसको श्रीरामचन्द्रजी ने रावण को परास्त करके जीता था अब वहां अंगरेज़ों का अधिकार है॥

भूगोल संकेत

भूगोलविद्या पृथ्वी पर के पानी और ज़मीन के बयान को कहते हैं॥

(महाद्वीप) एक बहुत बड़ा हिस्सा ज़मीन का है जिसके चारों तरफ़ समुद्र हो और उस में बहुत देश हों जैसे अमेरिका ॥

(द्वीप) ज़मीन के उस हिस्से को कहते हैं जिसके चारों तरफ़ समुद्र हो जैसे लंका ॥

(द्वीपसमूह) द्वीपों के समूह को कहते हैं जो नज़दीक २ समुद्र में हों जैसे हिन्द द्वीप समूह हिन्दुस्तान के दक्षिण में हैं ॥

(प्रायद्वीप) ज़मीन के उस हिस्से को कहते हैं जो तीन तरफ़ समुद्र से मिला हो और एक तरफ़ देश या महाद्वीप से मिला हो जैसे कोरिया और अफ़्रिका ॥

(डमरूमध्य) ज़मीन के ऐसे तंग हिस्से को कहते हैं जो किसी प्रायद्वीप को महाद्वीप से मिलावे या ज़मीन के किसी हिस्से को दूसरे हिस्से में मिलावे जैसे स्वीज़ का डमरूमध्य जो अफ़्रिका को एशिया से मिलाता है पर इस में अब एक नहर बन गयी है जिसके सबब से अफ़्रिका एक बड़े द्वीप की तरह होगया है। और पानामा उत्तरीय अमेरिका को दक्षिणीय अमेरिका से मिलाता है और कराह मलाया को स्याम से ॥

(अंतरीप) ज़मीन के उस कोण के छोर को कहते हैं जो गावदुम समुद्र में चला गया हो जैसे अंतरीप कुमारी हिन्दुस्तान के दक्षिण में ॥

(पर्वत) ऊंचे २ पत्थरों के टीलों को कहते हैं जो अकसर बर्फ़ से ढके रहते हैं और उन से छोटी पहाड़ियां कहलाती हैं जैसे हिमालय पर्वत और राजमहल की पहाड़ी ॥

(क़िस्मत) उस हिस्से को कहते हैं जिस में एक कमिश्नर का अधिकार हो और वह अकसर बोली जाती है उस शहर के नाम से जहां साहिब कमिश्नर रहते हैं ॥

(ज़िला) उस इलाक़े का नाम है जिस में एक कलेक्टर वा डिपुटी कमिश्नर का अधिकार हो और वह बोला जाता है अकसर उस शहर के नाम से जहां साहिब कलेक्टर वा डिपुटी कमिश्नर रहते हैं॥

आईनी क़िस्मत वा ज़िला उसको कहते हैं जिस में दीवानी कचहरियां जैसे जजी सदर अमीनी वगैर: लेने देने के झगड़े निबटाने के लिये मुकर्रर हों और ग़ैर आईनी ज़िलों में ये कचहरियां नहीं होती वहां ज़िले के साहिब वा तहसीलदार लेन देन के झगड़े निबटाया करते हैं॥

(महासागर) जल के सब से बड़े हिस्से को कहते हैं जैसे पासिफ़िक महासगर॥

(सागर) जल के हिस्से को कहते हैं जो महासागर से छोटा और अकसर ज़मीन से घिरा हो जैसे रूस का सागर और कुलज़म सागर॥

(खाड़ी) समुद्र के उस हिस्से को कहते हैं जो ज़मीन में दूर तक चला गया हो जैसे बंगाले की खाड़ी॥

(झील वा ताल) जल के उस हिस्से को कहते हैं जो चारों तरफ़ ज़मीन से घिरा हो और जिन झीलों का पानी खारी है उनको अकसर सागर कहते हैं जैसे कास्पियन सागर॥

(मुहाना) जल के कम चौड़े हिस्से को कहते हैं जो दो महासागरों वा सागरों को मिलाता है जैसे पाक मुहाना जो दक्षिणीय हिन्दुस्तान और लंका के मध्य है॥

(द्वीपसमूह सागर) उस सागर को कहते हैं जिस में बहुत से द्वीप हों॥

(बंदरस्थान) समुद्र की उस जगह को कहते हैं जहां जहाज़ आकर ठहरते हैं॥

(नदी) पानी की दैवीधार को कहते हैं जो किसी पहाड़ से निकलकर ज़मीन पर बहते २ किसी महासागर वा सागर से जा मिले जैसे गंगा। जो धार पानी की किसी नदी से निकली हो उसको नदी की शाखा कहते हैं और जो नदी किसी और नदी में आकर मिले वह उसकी आधीन कहलाती है॥

(नहर) पानी की कृत्रिम धारको कहते हैं जो किसी नदी या झील वगैरः से काट कर दूसरी जगह को ले जावें जैसे गंगा की नहर। जो नदी के बहने की तरफ़ मुह करके खड़े हों तो अपने दहने तरफ़ के किनारे को दाहना किनारा और बाईं तरफ़ के किनारे को बायां किनारा नदी का कहते हैं॥

(सोता) उस जगह को कहते हैं जहां से नदी निकलती है॥

(मुहरी) उस जगह को कहते हैं जहां नदी गिरती है॥

अलमिति प्रथम भागः॥

इश्तिहार

मदरसह दस्तूर तालीम मेरठ

जगद्भूगोल

दूसरा भाग

श्रीमन्महाराजाधिराज पश्चिमोत्तरदेशाधिकारी श्रीयुत नव्वाब लेफ़्टिनेंट गवर्नर बहादुर की आज्ञानुसार

मुन्शी ईश्वरीप्रसाद सर्वेंग मास्टर मदरसह दस्तूर तालीम मेरठ ने अपने बनाये हुए जग़राफ़ियह आलम का नागरी में उल्था किया

इलाहाबाद

गवर्नमेंट के छापेख़ाने में छापा गया

सन् १८७५ ई०

h Edition, 5,000 Copies,
rice per copy, 2 as., 6 pie.

नवीं बार ५,००० पुस्तकें
मोल फ़ी पुस्तक =)६ पाई
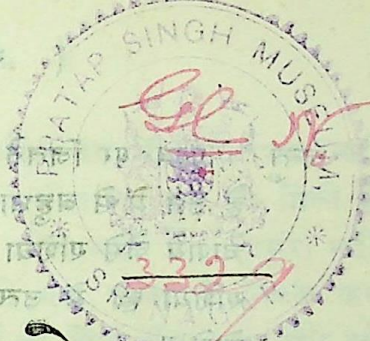
जगद्भूगोल

दूसरा भाग

एशिया का वर्णन

एशिया के उत्तर में हिम महासागर और पूर्व में पासिफ़िक महासागर और दक्षिण में हिन्द का महासागर और पश्चिम में कुल्ज़मसागर, स्वीज़ का डमरूमध्य, रूम का सागर, काला सागर, यूरोप है ॥ सीमा

एशिया की पृथ्वी उत्तर से दक्षिण को हिमालय तक क्रम से ऊंची होती गई है परंतु पूर्व और पश्चिम को इस उंचाई का ढुलाव इस प्रकार है कि पश्चिम में यह ढुलाव कम होता हुआ कास्पियन सागर से जा मिला है और पूर्व की पृथ्वी उंचाई में क्रम से नीची होती हुई पासफ़िक महासागर के समीप समुद्र के तल के बराबर हो गई है ॥ पृथ्वी

हिमालय से दक्षिण को जो पृथ्वी का ढुलाव है वह क्रम से कम नहीं हुआ है बरण पर्वत से उतरते ही बहुत निचान हो गया है ॥

जन्तु पृथ्वी पर जितने प्रकार के पशु पची उत्पन्न होते हैं उन में से बहुधा एशिया में मिलते हैं बरग कई चौपाये जैसे एशिया का सिंह और भांति २ के बंदर एशिया ही में उत्पन्न होते हैं अन्य देशों में नहीं होते ॥

वृक्ष जितने प्रकार के वृक्ष पृथ्वी पर उत्पन्न होते हैं उन में से बहुधा एशिया में उगते हैं ॥

रत्न एशिया में अनेक प्रकार के रत्न जैसे हीरा, लाल, नीलम, अक़ीक़, संगयशब आदि पाये जाते हैं और इन रत्नों को छोड़ एशिया में चांदी, सोना, पारा, लोहा, आदि की खानें भी हैं ॥

एशिया की प्रसिद्ध नदियां

(क्यांग) यह नदी तिब्बत में कोबी जंगल के दक्षिण ओर से निकल कर चीन के सम्पूर्ण देश में और नानकिन शहर के नीचे बहती हुई सब ३५०० मील बह कर पूर्वी समुद्र में जागिरी है (व्हांगहू) यह नदी चीन में क्यांग नदी से ३०० मील पूर्व को एथकू पर्वत से निकल कर तातारचीन और ठेठ चीन में २९०० मील बहकर चीन की भीत से तीन बार मिलती हुई पूर्वी समुद्र में जा गिरी है (ओबी) (यानेसिया, लीना) यह तीनों नदियां तातारचीन में अल्तीन पर्वत से निकल कर एशियाई रूस के सिबेरिया के सूबे में दक्षिण से उत्तर को बहती हुई औत्तरीय हिम महा सागर में जा गिरी हैं ॥

ओबी ३००० मील बही है और उस में (अयर्तशक) नदी तातारचीन से निकल कर २३०० मील बह कर आ मिली है और यानेसिया, लीना २८०० मील बही हैं । (उमूर) नदी तातारचीन में अल्तीन पर्वत की एक शाखा से निकल कर तातारचीन देश में पहिले पूर्व की ओर फिर उत्तर और पूर्व को २७०० मील वहकर तातारचीन की खाड़ी में गिरती है (ऐरावती) नदी तिब्बत के देश से निकल कर ब्रह्मा के देश में २००० मील बहकर अनेक प्रवाहों से नगरायस अंतरीप और मर्त्तबान की खाड़ी के बीच में गिरती है (फ़ुरात) नदी आरारात पर्वत की जड़ से निकल कर रूम और अ़रब के मध्य में १०५० मील बहकर फ़ारिस की खाड़ी में जा गिरी है (दजलह) नदी अर्मन पर्वत से निकल कर बग़दाद शहर में बहती हुई बसरे के समीप फ़ुरात नदी में आ गिरी है ॥

इनको छोड़ ब्रह्मपुत्र, सिंधु, गंगा, नर्मदा आदि और भी नदियां हैं जिनका वर्णन प्रथम भाग में हो चुका है ॥

एशिया के पर्वत

पर्वत का नाम	पता	उंचाई फ़ुटों में
हिमालय	हिन्दुस्तान के उत्तर में	३००००
हिन्दू कुश	अफ़ग़ानिस्तान के उत्तर में	२००००
अर्मन	आर्मीनिया के सूबे में इस में आरारात पर्वत मिला हुआ है	१८०००
क़ाफ़	कास्पियन और काले सागर के मध्य में	१७०००
लुब्नान	रूम देश में	१५०००
तौरस	तथा	१३०००
अल्तान	एशियाई रूस और मुग़लिस्तान के बीच में	१००००
यूराल	एशियाई रूस और फ़िरंगिस्तानी रूस के बीच में	६०००
सह्याद्री	हिन्दुस्तान के दक्षिण में पूर्व और पश्चिम को	५०००
बिंध्याचल	हिन्दुस्तान के मध्य में गुजरात से राजमहल तक	२०००
सुलेमान	हिन्दुस्तान और अफ़ग़ानिस्तान के मध्य में	0
त्यगसांग	चीन देश में	0

ज्वालामुखी पर्वत

क्यूरल द्वीप, जापान के द्वीप और कमिस्कटिका में ज्वाला-मुखी पर्वत हैं और त्यांगसांग पर्वत के समीप पेशान पर्वत ज्वालामुखी है और पंजाब देश में एक पर्वत ज्वालामुखी है ॥

एशिया सम्बन्धी टापू

सिंघालीनद्वीप, क्यूरल के द्वीप (जैसे न्यूफूं क्यूसू सिकोक) इन चारों टापुओं के समूह का नाम जापान देश है और एशिया के देशों में से एक देश गिना जाता है लूचू के द्वीप फ़ारमूसा, हिनान, संगापुर ये द्वीप पासिफ़िक महासागर में हैं॥

इंडेमान के द्वीप जिन में हिन्दुस्तान के महा अपराधी बंधुए भेजे जाते हैं और इन्हीं का नाम कालापानी है लंका, मालद्वीप, लक्कद्वीप ये टापू हिन्दुस्तान के दक्षिण हिन्द के महासागर में हैं। साइपर्स, रोडस ये दो द्वीप रूम के सागर में हैं। इन द्वीपों को छोड़ जिनका वर्णन ऊपर ऊपर हो चुका एशिया के दक्षिण और पूर्व में सुमाचा के द्वीप, जावा, बोर्नियो, स्लीवस, बांदा के द्वीप, फोपानिया के द्वीप, और तैमूर ये द्वीप हैं जो मलेशिया के टापुओं में गिने जाते हैं ॥

एशिया के प्रायद्वीप और डमरूमध्य

प्रसिद्ध प्रायद्वीप ७ हैं १ एशियाकोचक अर्थात् रूम देश का वह भाग जो शाम समुद्र और कालेसागर के बीच में है २ अरब ३ दाक्षिणी हिन्दुस्तान ४ अधिक हिन्दुस्तान जस में ब्रह्मा, मलाया, स्याम, कोचान ये देश मिले हुए हैं ५ मलाया ६ कोरिया ७ कमिस्कटिका। डमरूमध्य दो हैं १ डमरूमध्य

स्वीज़ जो अफ़्रीक़ह को एशिया से मिलाता है २ करा जो मलाया को स्याम से मिलाता है ॥

एशिया की खाड़ी और समुद्र आदि

औत्तरीय महासागर में कालासागर, ओबीखाड़ी। पासिफ़िक महासागर में कमिस्कटिका का समुद्र, अनादरखाड़ी, ओकतस्क समुद्र, जापान का समुद्र, तातारचीन की खाड़ी, पीतसागर, चीन का सागर, टान्किन् खाड़ी, स्याम की खाड़ी। हिन्द महासागर में बंगाले की खाड़ी, अरब का समुद्र खंबात की खाड़ी कच्छ की खाड़ी, फारस की खाड़ी, कुल्ज़म समुद्र वा अरब की खाड़ी, लेआंट की खाड़ी, मारमोरा सागर, काला सागर ॥

एशिया के मुहाने

मुहाने का नाम	पता
बेरंग	एशिया और अफ़्रीक़ह के बीच में
कोरिया	कोरिया और जापान के बीच में
पीरोज़	सिंघालीन और जैसो के बीच में
मैत्समे	न्यूफूं और जैसो के बीच में
फ़ारमूसा	फ़ारमूसा और चीन के बीच में
मलाका	सुमात्रा और मलाका के बीच में
पालक	हिन्दुस्तान और लंका के बीच में
उर्मस	अरब और फ़ारस के बीच में
बाबुलमंदव	अरब और अफ़्रीक़ह के बीच में
क़ुस्तुन्तुनिया	फ़िरिंगस्तानी रूम और एशिया के बीच में

एसिया की प्रसिद्ध झीलें वा सरोवर

तातार देश में कास्पियन सागर वा ख़िज़र सागर और आराल झील। सिमेरिया के सूबे में बैकाल झील। तिब्बत देश में मानसरोवर झील है॥

(प्रगट हो) कि जिस झील का पानी खारी होता है उसको सागर कहते हैं॥

एशिया के प्रसिद्ध अंतरीप

अंतरीप का नाम	पता	अंतरीप का नाम	पता
स्टबिरू	सिवेरिया में	नगरायस	ब्रह्मा में
इस्टक्रेप वा पूर्वी अंतरीप	तथा	कन्या कुमारी	हिन्दुस्तान में
लोपाटिका	कमिस्कटिका में	रासुलहद्द	अरब में
रोमानिया	मलाया में	रासबात्रा	एसिया कोचक में

एशिया के देश

एशिया में १३ देश हैं जिनका वर्णन संक्षेप रीति से नीचे लिखा जाता है और प्रत्येक देश की सीमा और राजधानी आदि का वर्णन भी आगे लिखे हुए ग्रंथ से बिदित होगा॥

१ हिन्दुस्तान

इस देश का वर्णन प्रथम भाग में हो चुका॥

२ ब्रह्मा

यह देश औत्तरीय अक्षांश ६ अंश से २६ अंश तक और पूर्वी देशांतर ६२ अंश से १०४ अंश तक चला गया है। इस देश में

ऐरावती, मातावान, सालवीन ३ नदियां बड़ी हैं। प्रसिद्ध नगर इस में आवा, अमरापुर, रंगून, पीगू, मोलमीन, आराकान हैं। इस देश में से आराकान की कमिश्नरी और पीगू मोलमीन का राज्य अंगरेज़ों के अधिकार में है। ब्रह्मावालों का मत बौद्ध है। इस देश में चांवल बहुतायत से उत्पन्न होते हैं और मुलम्मे का काम अच्छा बनता है। स्त्रियां यहां का सब कार्य करती हैं और कुछ लज्जा नहीं करतीं। खान इस देश में चांदी सोने, गंधक, सुर्मे, सीसे की हैं॥

३ स्याम

यह देश औत्तरीय अक्षांश १० अंश से १६ अंश तक और पूर्वी देशांतर ६६ अंश से १०५ अंश तक चला गया है और दो पर्वतों के मध्य में है। और प्रसिद्ध नदी इस में मीनम है। इस देश में चुम्बक पत्थर का पर्वत है। यहां दरचीनी, काली-मिरच, सुपारी, चांवल बहुतायत से उत्पन्न होते हैं और हीरा, नीलम, याक़ूत, लोहा, रांगा, सीसा, सुर्मह, तांबे की खान हैं। इस देश के हाथी बहुत अच्छे होते हैं। मत यहांवालों का ब्रह्मावलों से मिलता है॥

४ मलाया

यह देश प्रायद्वीपाकार है वहां के लोग इसको मलया देश कहते हैं औत्तरीय अक्षांश १ अंश २२ कला से लेकर ८ अंश तक और पूर्वी देशांतर ६८ अंश से १०५ अंश तक चला गया है। इस देश में से मलाका ज़िलअ अंगरेज़ों के अधिकार में है और मलका से दक्षिण और पूर्व को संघापुर और उत्तर और पश्चिम को पूलो पिलांग ये दोनों टापू भी अंगरेज़ों के अधिकार

में हैं । लौंग, जायफल, कालीमिरच, सुपारी, चांवल यहां बहुतायत से उत्पन्न होते हैं। स्वामी इस देश का सुन्नी मुसलमान है ॥

५ कोचीन का राज्य

यह राज्य औत्तरीय अक्षांश ८ अंश से २३ अंश तक और पूर्वी देशांतर १०४ अंश से १०८ अंश तक चला गया है। इस राज्य में ४ देश मिले हुए हैं कोचीन, टानकिन, कंबोज, लयास । प्रसिद्ध नदी कंबोज है जो चीन के देश से निकलकर १४ सौ मील बहकर समुद्र में जामिली है। यहां के मनुष्यों का मत बौद्ध है ॥

६ चीन का राज्य

यह राज्य औत्तरीय अक्षांश २१ अंश से ५५ अंश तक और पूर्वी देशांतर ७० अंश से १४२ अंश तक चला गया है । इस राज्य में ४ देश हैं मुख्य चीन, तिब्बत, चीनीतातार, कोरिया का प्रायद्वीप यह चारों देश चीन के बादशाह के अधिकार में हैं । इन देशों के बिना और द्वीप भी जैसे फ़ारमूसा, ल्यूक्य, आदि चीन में लगते हैं । मनुष्य संख्या, मुख्य चीन की ३६ किरोड़ और शेष तीनों देशों की १ किरोड़ । प्रसिद्ध नदी चीन की क्यांग, व्हांगहू हैं और इन में बहुतेरी छोटी २ नदियों का पानी आता है और इन में से कई एक नहरें काटी गई हैं। बादशाही नहर काटन के समीप से पेकिन तक लगभग ८०० मील के लंबी होगी और चौड़ाव में १०० फुट और गहरी ६½ फुट । तिब्बत का प्रसिद्ध शहर लासा जहां लामा

गुरु रहता है तिब्बत में मानसरोवर झील है। चीनीतातार के प्रसिद्ध शहर यारक़न्द, काशगर। मुख्यचीन के प्रसिद्ध शहर पेकिन, नानकिन, कांटन हैं। ब्योपार की बस्तु यहां चीनी के बर्तन, रेशमी कपड़े, चाय हैं। चीन के मनुष्य परिश्रमी और कारीगरी में चतुर और विद्या के सीखने में अत्यन्त श्रम करते हैं और कन्फ़ूयूशश और फू के मत पर चलते हैं। मनुष्यों की बनाई अचंभित बस्तुओं में से इस राज्य में एक बहुत बड़ी दीवार मुख्य चीन के उत्तर में है यह भींत १५ सौ मील लंबी और ४५ फ़ुट के अनुमान चौड़ी होगी और २० फ़ुट से ३० फ़ुट तक ऊंची है और सौ २ गज़ के अंतर से बुर्ज बने हुए हैं। जो द्वीप चीन को लगते हैं उन में से हांगकांग अंगरेज़ों के अधिकार में है और हांगकांग का बंदर और कांटन का बंदर और अमूये और शांघे ये चार स्थान प्रत्येक देश के ब्योपार के लिये नियत हैं॥

७ जापान

इस देश में कई द्वीप हैं जो चीन के पूर्व में औत्तरीय अक्षांश २७ अंश से ४६ अंश के बीच में हैं इन द्वीपों में से ४ बड़े द्वीप हैं (१ जेसो) जिस में मैत्स्म प्रसिद्ध शहर है (२न्यूफ़ू) जिस में जदो, म्याकू प्रसिद्ध शहर हैं (३ क्यूसू) जिस में नानगासा के प्रसिद्ध बंदर हैं (४ सिकोक) जिस में प्रसिद्ध शहर टूसा॥

जापान के मनुष्य परिश्रमी हैं और बहुधा लेन देन चीन वालों से रखते हैं। पवन पानी यहां का बहुत अच्छा है और पृथ्वी उपजाऊ और सोना तो यहां का संपूर्ण पृथ्वी में प्रसिद्ध है और मनुष्य यहां के मूर्त्तिपूजक हैं॥

८ एशियाई रूस

इसको एशियाई रूस इसलिये कहते हैं कि रूस का कुछ भाग फ़रिंगस्तान में भी है इसलिये वह फ़रिंगस्तानी रूस कहलाता है और यह एशियाई रूस। यह देश औत्तरीय अक्षांश ४८ अंश से ७८ अंश तक और पूर्वी देशांतर ५६ अंश से पश्चिमी देशांतर १७० अंश तक चला गया है। इस देश में ३ बड़े भाग हैं (१ पूर्वी सिवेरिया) जिस में बड़े शहर अरकूस्क, ओकाटस्क। (२ पश्चिमा सिवेरिया) जिस में प्रसिद्ध शहर तोबालस्क, तोमस्क। (३ जारिजया) जिस में प्रसिद्ध शहर तिफ़लीस, अपरलवान हैं इस देश में प्रसिद्ध नदी लीना, यानेसिया, ओब हैं और पर्वत यूराल और क़ाफ़। इसी क़ाफ़ पर्वत की घाटियां बंद करने को सकन्दर ने भीत चुनवाई थी जिसको हद्द सिकन्दरी कहते हैं। मत यहां के मनुष्यों का भिन्न २ है अर्थात् कुछ मनुष्य तो ईसाई और कुछ मूर्त्तिपूजक और कुछ मुसलमान हैं। यहां के बहुधा मनुष्य उठाऊ चूल्हा रहते हैं इस देस में रत्न बहु मोल और चांदी सोना बहुतायत से मिलता है और चाय, चमड़ा, चर्बी, कस्तूरी, संबूर, संजाब, क़ाक़ुम, पाट और रत्नादि यहां से अन्य देशों में जाते हैं॥

९ अफ़ग़ानिस्तान

यह देश हिन्दुस्तान और ईरान के बीच औत्तरीय अक्षांश २५ अंश से ३७ अंश तक और पूर्वी देशांतर ५८ अंश से ७२ अंश तक चला गया है इस देश में ३ बड़े भाग हैं (अफ़ग़ानिस्तान) जिस में काबुल, क़ंधार, जलालाबाद, ग़ज़नी, टूशक

बड़े शहर हैं। (२ बिलोचिस्तान) जिस में प्रसिद्ध शहर क़िलात है (३ पूर्वी ख़ुरासान) जिस में प्रसिद्ध शहर हिरात है इस देश में प्रसिद्ध पर्वत हिन्दूकुश और नदी हरमंद है। मनुष्य इस देश के बहुधा सुन्नी मुसलमान और अत्यंत परिश्रमी हैं॥

१० तूरान

इसको तुरकिस्तान और तातार भी कहते हैं औत्तरीय अक्षांश ३५ अंश से ५१ अंश तक और पूर्वी देशांतर ५२ अंश से ७४ अंश तक चला गया है। इस में ४ बड़े भाग हैं (१ कोक़ान) जिस में बड़े शहर कोक़ान तुरकिस्तान हैं (२ ख़ेवा ख़्वारज़म) जिस में ख़ेवा बड़ा शहर है (३ बुख़ारा) जिस में बुख़ारा, समरक़न्द, बलख़ बड़े शहर हैं (४ कुंदूज़) जिस में कुंदूज़, बदख़शां बड़े शहर हैं। इस देश में एक झील जिसको आराल झील कहते हैं बहुत बड़ी है और सींहू और जींहू नदी इसी में गिरती हैं। बदख़शां का इलाक़ह लाल की उत्पत्ति से प्रसिद्ध है। इस देश में बहुधा मनुष्य पौहे पाल कर अपनी अवस्था व्यतीत करते हैं और जहां न्यार पानी देखते हैं तहां तंबोटी तान कर रहते हैं। यहां के लोग सुन्नी मुसलमान हैं॥

११ ईरान वा फ़ारिस

यह देश औत्तरीय अक्षांश २५ अंश से ४० अंश तक और पूर्वी देशांतर ४४ अंश से ६५ अंश तक चला गया है। इस देश में १२ सूबे और प्रत्येक सूबे में बड़े शहर नीचे लिखे हुए यंत्र से विदित होंगे॥

सूबे का नाम	पता	प्रसिद्ध शहर
आज़रबाईजान	उत्तर और पश्चिम को	रेज़
पूर्वी गुर्दिस्तान	आज़रबाईजान के दक्षिण	किरमानशाह
लोरिस्तान	गुर्दिस्तान के दक्षिण	खुर्म्माबाद
खुजिस्तान	लोरिस्तान के दक्षिण	बज़फल
फ़ारिस	खुजिस्तान के पूर्व	शीराज़
लारिस्तान	फ़ारिस के दक्षिण	लार
किर्मान	फ़ारिस के पूर्व	किर्मान
खुरासान	किर्मान के उत्तर	मशहद
इराक़	फ़ारिस के उत्तर	तिहरान अस्फ़हान
माजिंदरां	इराक़ के उत्तर	सारी
गिलान	माजिंदरां के उत्तर पश्चिम	रशद
उस्तराबाद	गिलान के उत्तर	उस्तराबाद

प्रसिद्ध राजधानी इस देश की इस्फ़हान थी और अब तिहरान है। हुर्मज़ आदि द्वीप जो फ़ारिस की खाड़ी में हैं वह भी इस राज्य में गिने जाते हैं। प्रसिद्ध पर्वत अल्बुर्ज़ है ब्योपार की बस्तु यहां की क़ालीन, रेशम के बस्त्र जैसे क़मख़ाब शाल और मोती घोड़े और मोमयाई आदि औषधि हैं। इस देश में मंदिर आदि के ऐसे चिन्ह पाये जाते हैं जिन से विदित होता है कि प्राचीन समय में यहां के मनुष्यों का मत हिन्दुस्तानियों के मत के सदृश था। पहिले यहां के

मनुष्य अग्निपूजक थे । सन् ६३६ ईसवी में इस देश का बादशाह यज़्दगुर्द अरबों में से जब परास्त हुआ उस समय ईरान के रहनेवालों को मुसलमान होना पड़ा । ईरानियों के बचनानुसार ज़रदश्त ने अग्निपूजकों का मत प्रचार किया ॥

१२ अरब

यह प्रायद्वीप एशिया के पश्चिमोत्तर कोण में औत्तरीय अक्षांश १२½ अंश से ३४½ अंश तक और पूर्वी देशांतर ३२½ अंश से ६० अंश तक चला गया है। इस देश में ६ बड़े भाग हैं (१ हजाज़) जिस में मक्कह, मदीनह, जद्दह, इयम्बू बड़े शहर हैं (२ लक्सा) जिस में लक्सा, अलकात्फ़ बड़े शहर हैं (३ बेदजेद) जिस में बड़ा शहर दराया (४ ऊमा) जिस में बड़ा शहर मस्कत (५ हज़्रमौत) जिस में बड़ा शहर शबाब (६ यमन) जिस में प्रसिद्ध शहर सना, मखा, इदन हैं। मक्कह और मदीनह रूम के बादशाह के अधिकार में हैं और शेष पृथक् २ हाकिमों के अधिकार में हैं मक्कह मदीनह मुसलमानों का पूज्यस्थान है और काबह मक्कह में ही है । मक्कह मुहम्मद की जन्मभूमि है और मदीनह में मुहम्मद की समाधि है । इदन का क़िलअ कुछ दिनों से अंगरेज़ों के अधिकार में आगया है। प्रसिद्ध पर्वत तूर है जो कुल्ज़म समुद्र के तट पर है जहां पर मूसा पयम्बर के द्वारा यहूदियों को तौरेत मिली थी । बासी इस देश के मुसलमान हैं ॥

१३ एशियाई रूम

इसको एशियाई रूम इस कारण कहते हैं कि रूम का कुछ भाग फ़रिंगस्तान में भी है और यहां केवल उसी भाग का

वर्णन होता है जो एशिया में है फ़रिंगस्तान इसको एशियाई टर्की कहते हैं। यह देश औत्तरीय अक्षांश ३० अंश से ४२ अंश तक और पूर्वी देशांतर २६ अंश से २८ अंश तक चला गया है। इस देश में ६ भाग और प्रत्येक भाग में प्रसिद्ध शहर नीचे लिखे हुए यंत्र के द्वारा बिदित होंगे॥

नम्बर	भाग का नाम	प्रसिद्ध शहर
१	इन्अदूलिया	समरना
२	करमेनिया	कोनिया
३	रूम वा सेवास	तौकित
४	पश्चिमी अर्मीनियां	अर्ज़रूम, काज
५	पश्चमी गुर्दिस्तान	नितलस
६	इराक़ अरबी वा कालदिया	बग़दाद बसरा
७	अलजैरा वा मसोपुटेमियां अर्थात् फ़रात और जलदह के बीच	दियारवक्र
८	औत्तरीय शाम	हलब, दमिष्क, तिरपुली, बिरोट
९	दाक्षिणीय शाम, फुलस्ती	औरशलाम

इस देश में दजलह, फ़ुरात, जोर्दन प्रसिद्ध नदी हैं। और तूरस, उलम्पस, इदा, आरारात, लुबीनान यह ५ पर्वत हैं। रोडस साईप्रस २ द्वीप प्रसिद्ध हैं। राजधानी इस देश की कुस्तुन्तुनिया है जिसको अस्तंबोल भी कहते हैं और यह फ़रिंगस्तानी रूम में है निवासी यहां के मुसलमान हैं॥

देश का नाम	चारों सीमा				राजधानी	क्षेत्र फल वर्गात्मक मील	मनुष्य संख्या
	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम			
हिन्दुस्तान	हिमालय	ब्रह्मा बंगाले की खाड़ी	हिन्द का महासागर	अफ़ग़ानिस्तान अरब का सागर	कलकत्ता	१४०००००	१८०००००००
ब्रह्मा	चीन	कोचीन स्याम	मर्तवान की खाड़ी	हिन्दुस्तान बंगाले की खाड़ी	आवा	१६४०००	१४००००००
स्याम	कोचीन	कोचीन	स्याम की खाड़ी	ब्रह्मा	बिनक्काक	१५५०००	२६५४०००
मलाया	कराह का डमरुमध्य	पासिफ़िक महासागर	पासिफ़िक महासागर	हिन्द का महासागर	मलाक्का	०	०
कोचीन का राज्य	ठेठ चीन	तथा	तथा	स्याम, ब्रह्मा	हुरा	१५००००	१३६५००००

देश का नाम	चारों सीमा				राजधानी	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	मनुष्यसंख्या
	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम			
चीनका राज्य	एशियाई रूस	पासिफ़िक महासागर	हिमालय, ब्रह्मा, कोचीन	तूरान	पेकन	५००००००	३००००००००
जापान	पीरोज़ का मुहाना	तथा	पासिफ़िक महासागर	जापान का सागरकोरिया का मुहाना	जेटू	२६००००	२५००००००
एशियाई रूस	ओत्तरीय महासागर	तथा	चीनी तातार, तूरान ईरान	फ़िरंगिस्तानी रूस	पीटर्सवर्ग	५०००००	६००००००
अफ़ग़ानिस्तान	तूरान	हिन्दुस्तान	हिन्द का महासागर	ईरान	काबुल	४०००००	१४००००००

देश का नाम	चारों सीमा				राजधानी	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	मनुष्यसंख्या
	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम			
तूरान	एशियाई रूस	चीनी तातार	ईरान, अफ़ग़ानिस्तान	आराल नदी कास्पियन सगार	समरक़न्द	७५००००	६००००००
ईरान	तूरान कास्पियन सागर एशियाई रूस	अफ़ग़ानिस्तान	फ़ारिस कीखाढ़ी	एशियाई रूम	तुहरान	४५००००	८००००००
अ़रब	एशियाई रूम	फ़ारिस की खाड़ी अ़भ्या खाड़ी	हिन्द कामहासागर	कुल्ज़मसागर स्वीज़काडमरू मध्य	मक्कह	१००००००	१०००००००
एशियाई रूम	कालासागर	ईरान	अ़रब	रूम का सागर द्वीपसमूहसागर	कुस्तुन्तुनिया	४५००००	१५००००००

पृथ्वी के गोले का वर्णन

पृथ्वी गोलाकार कुछ उत्तर दक्षिण की ओर दबी आकार हुई नारंगी के सदृश है। व्यास ८००० मील और परिधि २४ हज़ार मील है॥

पृथ्वी में दो गति हैं एक यह कि बर्ष भर में गति सूर्य के चारों ओर जो पृथ्वी से ९ किरोड़ ५० लाख मील दूर है घूम जाती है और इस गति के कारण ऋतु पर्यय होता है और दूसरी यह कि अपनी कीली पर पश्चिम से पूर्व को घूम जाती है जिसके कारण रात्रि दिन होता है। इस कीली के दोनों छोर जिन पर वह ८ प्रहर में एक बार गति पूरी करती है उत्तर दक्षिण दो ध्रुव कहलाते हैं॥

कल्पित रेखा जो पृथ्वी के चित्र पर खींची गई रेखाओं हैं उनके नाम यह हैं भूमध्यरेखा, मकररेखा, मध्यान्ह-का बर्णन रेखा, लग्नमंडल, कर्करेखा, ध्रुवरेखा अब प्रत्येक रेखा का लक्षण आगे लिखते हैं॥

मध्यरेखा उसके बड़े वृत्त को कहते हैं जो ध्रुवों रेखाओं के बीचों बीच होकर पृथ्वी के उत्तर दक्षिण दो के लक्षण समान भाग करती है मध्यान्हरेखा वह बड़े वृत्त हैं जो ध्रुवों पर होकर पृथ्वी के पूर्व पश्चिम दो समान भाग करते हैं और ऐसे वृत्त पृथ्वी पर अपरमित हो सक्ते हैं परंतु नक़शों और गोलों में बहुधा दश २ अंश के अंतर से खैंचे जाते हैं। कर्करेखा उस वृत्त को जो कहते हैं जो भूमध्यरेखा के समानांतर उत्तर को २३½ अंश पर खैंचा गया है। मकररेखा वह वृत्त

है जो भूमध्यरेखा के समानांतर दक्षिण को २३½ अंश पर खैंचा गया है। औत्तरीय ध्रुवरेखा वह वृत्त है जो कर्करेखा के समानांतर उत्तर ध्रुव से २३½ अंश पर खैंचा गया है। दाक्षिणीय ध्रुवरेखा वह वृत्त है जो मकररेखा के समानांतर दक्षिण ध्रुव से २३½ अंश पर खैंचा गया है। लग्नमंडल वह बड़ा वृत्त है जो भूमध्यरेखा को दो स्थानों में काटता हुआ उत्तर में कर्करेखा और दक्षिण में मकररेखा से संपात करता है इसको क्रांतिवृत्त भी कहते हैं ॥

अंश विभाग — प्रत्येक वृत्त बड़ा हो वा छोटा ३६० बराबर के भागों में बांटा जाता है और उसके प्रत्येक भाग को अंश कहते हैं और प्रत्येक अंश के साठवें भाग का नाम कला है ॥

पृथ्वी विभाग — शरदी गर्मी के होने के कारण पृथ्वी के ५ भाग किये हैं (१ उष्ण कटिबंध) (२ औत्तरीय मध्यम कटिबंध) (३ दाक्षिणीय मध्यम कटिबंध) (४ औत्तरीय शीत कटिबंध) (५ दाक्षिणीय शीत कटिबंध)। उष्ण कटिबंध वह है जो कर्करेखा और मकररेखा के मध्य में है और जो भाग पृथ्वी का कर्करेखा और औत्तरीय ध्रुववृत्त के मध्य में है उसको औत्तरीय मध्यम कटिबंध और जो भाग मकररेखा और दाक्षिणीय ध्रुववृत्त के मध्य में है उसको दाक्षिणीय मध्यम कटिबंध कहते हैं और जो दो भाग ध्रुववृत्तों के बीच में हैं उनको क्रम से औत्तरीय शीत कटिबंध और दाक्षिणीय शीत कटिबंध कहते हैं ॥

इस प्रकार विभाग करने का कारण यह है कि कर्करेखा और मकररेखा के मध्य में जो भाग है उस में सूर्य्य की किरणें एक बर्ष में दो बार लंबरूपी गिरती हैं कि जिनके कारण उष्णता अधिक होती है इसलिये उस भाग का नाम उष्ण रक्खा। कर्करेखा और औत्तरीय ध्रुववृत्त के बीच में और मकररेखा और दाक्षिणीय ध्रुववृत्त के मध्य में सदैव सूर्य्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं कि जिसके कारण उन में उष्ण कटिबंध की अपेक्षा गरमी कम और शीत कटिबंध की अपेक्षा जहां सूर्य्य की किरणें बहुत ही तिरछी पड़ती हैं गरमी अधिक होती है इसलिये उन दोनों भागों का नाम मध्यम रक्खा। ध्रुववृत्तों के भीतर के भाग इस कारण शीत ठहराये कि वहां सूर्य्य की किरणें कभी २ लेश मात्र भी नहीं पड़तीं बरण ध्रुवों पर तो ६ महीने का दिन और ६ महीने की रात्रि होती है॥

अब यह दिखाया जाता है कि उष्ण कटिबंध आदि के निवासियों की छाया दो प्रहर के समय किस २ ओर को पड़ती है। उष्ण कटिबंध वालों की छाया पृथक् २ समय में पृथक् २ ओर को पड़ती है कारण यह है कि सूर्य्य की गति एक बर्ष में कर्करेखा से मकररेखा तक रहती है इसलिये सूर्य्य उष्ण कटिबंध के प्रत्येक स्थानों से एक बर्ष में सब दिशाओं में हो जायगा और कभी ठीक शिर पर होगा अब जब सूर्य्य उत्तर को होगा तब छाया दक्षिण को पड़ेगी और जब दक्षिण को होगा तब उत्तर को जब पूर्व में होगा तब पश्चिम में जब पश्चिम में हो तब पूर्व में पड़ेगी और जब ठीक शिर पर होगा तब छाया नाम को भी नहीं पड़ेगी। औत्तरीय मध्यम कटिबंध वालों के निवासियों की छाया सदैव उत्तर को और दाक्षिणीय

मध्यम कटिबंध के निवासियों की छाया दक्षिण को पड़ेगी क्योंकि सूर्य्य सदैव औत्तरीय मध्यम कटिबंध से दक्षिण को और दाक्षिणीय मध्यम कटिबंध से उत्तर को रहता है। शीत कटिबंधों में भी मध्यम कटिबंधों के सदृश छाया पड़ती है॥

पृथ्वी की कीली भूगतिनिर्म्मितवृत्त पर (अर्थात् वह कल्पित धरातल जो सूर्य्य की चारों ओर पृथ्वी की गति से बनती है) ६६½ अंश का कोण बनाती है अर्थात् उत्तर ध्रुव लंब रूपी दिशा से २३½ अंश झुका है इसी कारण पृथ्वी के सूर्य्य की चारों ओर घूमने में ऋतु पर्यय और रात्रि दिन की न्यूनाधिकता होती है॥

॥ क्षितिज दो प्रकार की हैं १ दृष्टि २ बास्तवी दृष्टि क्षितिज वह वृत्त है जो दृष्टा की दृष्ट्यन्त से बनता है अर्थात् जहां आकाश पृथ्वी से मिला हुआ दृष्ट पड़ता है और क्षितिज बास्तावी एक कल्पित धरातल है जो गोले के केन्द्र में होकर क्षितिज दृष्टि समानांतर जाता है॥

अक्षांश और देशांतर का वर्णन

अक्षांश का लक्षण — धरातल पर भूमध्यरेखा से किसी स्थान का अंतर औत्तरीय ध्रुव की ओर अथवा दाक्षिणीय ध्रुव की ओर उस स्थान का अक्षांश कहलाता है और यह अंतर मध्यान्हरेखा के अंशों पर नापा जाता है जिसका एक अंश ६९½ मील का होता है अब जो

उत्तर को नापा है तो औत्तरीय अक्षांश और जो दक्षिण को नापा है तो दाक्षिणीय अक्षांश कहलाता है ॥

धरातल पर मध्यान्हरेखा से किसी स्थान का देशांतर अंतर पूर्व वा पश्चिम को उस स्थान का देशांतर का लक्षण कहलाता है और यह अंतर भूमध्यरेखा वा भूमध्य-रेखा के समानांतर किसी वृत्त पर गिना जाता है अब जो पूर्व को नापा है तो पूर्वी देशांतर और जो पश्चिम को नापा है तो पश्चिमी देशांतर कहलावेगा और इसी प्रकार प्रत्येक नक़शों के किनारों पर अक्षांश और देशांतरों के अंश कटे होते हैं जैसे हिन्दुस्तान का औत्तरीय अक्षांश ८ अंश से ३५ अंश तक और पूर्वी देशांतर ६७ अंश से ६२ अंश तक। और एशिया का औत्तरीय अक्षांश २ अंश से ७७ अंश तक और पूर्वी देशांतर २७ अंश पूर्वी से पूर्व को १७० अंश पश्चिमी तक अर्थात् एशिया का सब देशांतर १६३ अंश है॥

(प्रकट) हो कि प्रथम मध्य दिवस उस मध्यान्ह रेखाको कहते हैं कि जहां से सब स्थानों का देशांतर नापा जाता है जैसे आज कल ग्रीनिच शहर की मध्यान्हरेखा को प्रथम मध्य दिवस मानते हैं और जो ग्रीनिच स्थान लंदन शहर से वहुत समीप है इस कारण सब मनुष्य उसको लंदन का मध्य दिवस कहते हैं स्मरण रहे कि प्रत्येक स्थान का अक्षांश ६० अंश से अधिक न होगा चाहे औत्तरीय अक्षांश हो वा दाक्षिणीय और देशांतरांश १८० अंश से अधिक

अंश वि-भाग

न होगा चाहे पूर्वी देशांतर हो वा पश्चिमी क्योंकि पृथ्वी के गोले पर अक्षांश और देशांतर के अंश इस प्रकार विभाग किये हैं कि प्रथम मध्य दिवस भूमध्यरेखा को जिस बिंदु पर काटता है वहां से प्रत्येक ध्रुव तक प्रथम मध्य दिवस के ९० अंश किये हैं इस कारण से प्रथम मध्य दिवस के (अर्थात् वह वृत्तार्द्ध मध्यान्ह रेखा का जो ग्रीनिच शहर पर जाता है) १८० अंश होजाते हैं और वह अंश अक्षांश कहलाते हैं और फिर प्रथम मध्य दिवस के प्रत्येक अंश से भूमध्यरेखा के समानांतर वृत्त खींचने से और मध्यान्ह रेखाओं को भी भूमध्यरेखा से ध्रुवों तक दोनों ओर नव्वे २ अंश अर्थात् सब ३६० अंश हो जाते हैं। देशांतरों के अंशों को इस प्रकार बांटा है कि जिस बिंदु पर प्रथम मध्य दिवस भूमध्यरेखा को काटता है उसी बिंदु से आधी भूमध्यरेखा के १८० अंश पूर्व को और उसी बिंदु से दूसरी आधी रेखा के १८० अंश पश्चिम को किये हैं और फिर भूमध्यरेखा के प्रत्येक अंश से मध्यान्ह रेखा खींचने से और भूमध्यरेखा के समानांतर वृत्तों के भी प्रथम दिवस से पूर्व पश्चिम १८० हो जाते हैं। जो कि भूमध्यरेखा के समानांतर वृत्त परस्पर छोटे बड़े होते हैं इस कारण उनके अंशों की संख्या तो बराबर अर्थात् ३६० है परंतु परिमाण में न्यूनाधिक होते हैं इसलिये देशांतर के एक अंश का कुछ परिमाण नियत नहीं है जैसे अक्षांश का एक अंश ६९$\frac{1}{2}$ मील का होता है क्योंकि

अक्षांश का प्रत्येक अंश परिमाण में भी बराबर होता है। जो किसी स्थान के अक्षांश और देशांतरांश जानने हों तो उस स्थान से एक मध्यान्हरेखा और एक वृत्त, भूमध्यरेखा के समानांतर खींचा अब यह समानांतर वृत्त जिस अंश पर प्रथम मध्यदिवस को काटें वही संख्या अक्षांश की होगी और यह मध्यान्हरेखा भूमध्यरेखा को जिस अंश पर काटें वह संख्या देशांतरांश की होगी अथवा यह कि भूमध्यरेखा से इस खिंची हुई मध्यान्हरेखा के जिस अंश पर पूर्वोक्त स्थान हो वह संख्या अक्षांश की होगी और प्रथम मध्यदिवस से भूमध्यरेखा के इस खिंचे हुए समानांतर वृत्त के जिस अंश पर पूर्वोक्त स्थान हो वह संख्या देशांतरांश की होगी जैसे औत्तरीय अक्षांश ग्वालियर का २६ अंश और पूर्वी देशांतर ८८ अंश है और इसी रीत पर देहली, कलकत्तह, उज्जेन, मक्कह, तिहरान, पेकिन, जद्दो, कुस्तुन्तुनिया, समरकंद, लंदन, डबलन इन शहरों का अक्षांश और देशांतरांश नक़्शे में बताओ ॥

जो अक्षांश और देशांतरांश किसी देश का जानना हो तो उस देश के औत्तरीय और दाक्षिणीय छोरों से दो समानांतर वृत्त भूमध्यरेखा के खींचो अब जिन दो स्थानों पर वृत्त प्रथम मध्यदिवस को काटें उनके बीच में जितने अंश हों वह संख्या उस देश के अक्षांश की होगी और पूर्वी और पश्चिमी छोरों से दो मध्यान्हरेखा खींचो जिन दो बिन्दुओं पर यह मध्यान्हरेखा भूमध्यरेखा को काटें उनके बीच में जितने अंश हों वह संख्या उस देश के देशांतरांश की होगी जैसे अक्षांश और देशांतरांश हिन्दुस्तान और एशिया का ऊपर वर्णन किया ॥

जो किसी स्थान के अक्षांश और देशांतरांश जाने हुए हों तो उस स्थान को नक़्शे में इस प्रकार ढूंढ़ो कि भूमध्यरेखा पर देशांतरांश गिन के एक मध्यान्हरेखा खींचो फिर इस मध्यान्हरेखा पर जाने हुए अक्षांश गिनो अब जहां यह अंश पूरे हों वही वाञ्छित स्थान होगा ॥

जो किसी दो स्थानों के अक्षांश और देशांतरांशों का अंतर जानना हो तो दोनों स्थानों के अक्षांश नक़्शे में गिनो अब जो वे दोनों स्थान भूमध्यरेखा से एक ओर हों तो दोनों के अक्षांशों का अंतर निकालो और जो भूमध्यरेखा से दोनों ओर हों तो योग करो अब यह अंतर वा योग दोनों स्थानों के अक्षांशों का अंतर होगा और देशांतरांशों का अंतर इस प्रकार निकालो कि पहिले दोनों स्थानों का देशांतरांश नक़्शे में देखो अब जो वे स्थान प्रथम मध्यदिवस से एक ओर हों तो देशांतरांशों की संख्या का अंतर करो और जो प्रथम मध्य-दिवस के दोनों ओर हों तो योग करो परंतु योग करने में इस बात का ध्यान रक्खो कि योगफल १८० अंश से अधिक न हो जाय और कदाचित् यह योगफल १८० अंश से अधिक हो जाय तो इस योगफल को ३६० में से घटाओ फिर इस क्रिया करने से जो लब्धि हो वही पूर्वोक्त स्थानों के देशां-तरांशों में अंतर होगा ॥

(प्रकट) हो कि जिन स्थानों का एक ही अक्षांश है वहां ऋतु और रात्रि दिन की संख्या एकसी होती है परंतु नदी पर्वतादि के कारण पवन पानी में अंतर होजाता है और जिन स्थानों के देशांतरांश तुल्य हैं उन में दो प्रहर, संध्या, प्रातःकाल एक ही समय होते हैं। जो एक स्थान का समय

जाना हुआ हो और किसी दूसरे स्थान का समय जानना हो तो इस प्रकार जानो कि पहिले दोनों स्थानों के देशांतरांशों का अंतर पूर्वोक्त रीति से जानो। और फिर जितने अंश का अंतर हो उस में १५ अंश पीछे एक घंटा वा एक अंश पीछे ४ मिनट के हिसाब से उसके समय में न्यूनाधिकता होगी जैसे कि एक स्थान किसी दूसरे स्थान से १० अंश पूर्व को है तो वहां ४० मिनट पहिले सूर्य्य उदय होगा और पश्चिम में ४० मिनट पीछे और जो दो स्थानों का समय जाना हुआ हो तो ४ मिनट पीछे १ अंश के हिसाब से उनके देशांतरांशों का अंतर होगा जैसे किसी स्थान में दूसरे स्थान की अपेक्षा एक घंटे पहिले सूर्य्य उदय होता हो तो वह स्थान पूर्वोक्त रीति से १५ अंश पूर्व को होगा॥

जल और स्थल का वर्णन

संपूर्ण पृथ्वी पर $\frac{2}{3}$ से अधिक जल और $\frac{1}{3}$ से कम स्थल है अर्थात् पृथ्वी के गोले का संपूर्ण क्षेत्रफल १९ किरोड़ ६५ लाख मील वर्गात्मक है उस में ५ किरोड़ १० लाख मील वर्गात्मक स्थल है और शेष १४ किरोड़ ५५ लाख मील जल है॥

स्थल समुद्र के जल से ऊंचा है क्योंकि स्थल की तल बिसब नदियां बह कर समुद्र में गिरती हैं और जो भाग कि पानी नीचे की ओर बहता है इस से स्पष्ट है कि समुद्र का तल स्थल की अपेक्षा निचाव में है।

समुद्र सब एक ही है परंतु पता लगने के कारण ५ भागों में बांटा है ॥

(१ पासिफ़िक महासागर) यह समुद्र बहुत बड़ा अमरीका के महाद्वीप और एसिया के बीच में है। इस समुद्र के पूर्वी तट पर कमिस्कटिका सागर, फ़ोर्निया खाड़ी, पानामा खाड़ी और पश्चिमी तट पर ओक्तस्क सागर, पीला सागर, स्याम की खाड़ी हैं (२ अटलांटिक महासागर) जिसको उक़ियानूस भी कहते हैं यह ससुद्र अमरीका के मह द्वीप से यूरोप और अफ़्रीक़ह तक चला गया है। इस समुद्र के पूर्वी तट पर बाल्तक सागर फ़िनलेण्ड की खाड़ी जबलतारक़ का मुहाना जो रूम सागर को मिलाता है गिनी की खाड़ी और पश्चिमी तट पर देवस का मुहाना मकसीकू की खाड़ी कारबीन सागर, द्वीप समूह सागर हैं (३ हिन्द का महासागर) यह समुद्र अफ़्रीक़ह से लेके इस्ट्रेलिया के द्वीप तक और हिन्दुस्तान से दाक्षिणीय महासागर तक है इसके प्रसिद्ध भाग कुल्ज़म सागर, उम्मा वा अ़रब का सागर बंगाले की खाड़ी हैं (४ औत्तरीय हिम महासागर) औत्तरीय ध्रुव के चारों ओर है यह महासागर बेरिंग मुहाने के द्वारा जो नई पुरानी दुनिया के बीच में है पासिफ़िक़ महासागर से मिलता है। इसके प्रसिद्ध भाग श्वेत सागर ओबी सागर हैं (५ दाक्षिणीय हिम महासागर) जो दक्षिण ध्रुव के चारों ओर है इस में कोई प्रसिद्ध खाड़ी नहीं हैं। दो पिछले महासागरों का पानी शरदी से जम कर हिम बना रहता है जो ध्रुवों के समीप है वह तो कभी नहीं गलता और शेष ग्रीष्म ऋतु में जहां कहीं गलता है तो हिम के बड़े २ टुकड़े पर्वतों के सदृश पानी के ऊपर तैरने लगते हैं। ज़हाज़ों को इन समुद्रों

में बड़ा भय रहता है। समुद्र का जल खारी और कड़ुवा है परंतु अत्यंत ही स्वच्छ और नीला है परंतु किनारों के समीप का जल हरापन लिये होता है। कहीं समुद्र बहुत गहरा और कहीं थोड़ा परंतु बहुधा समुद्र की गहराई आधे मील की बिचारते हैं॥

पृथ्वी के गोले के दो समान भाग इस प्रकार किये हैं एक पूर्वी गोलार्द्ध जिसका देशांतर २० अंश पश्चिमी से पूर्व को १६० अंश पूर्वी तक अर्थात् सब १८० अंश स्थल वि-और दूसरा पश्चिमी गोलार्द्ध जिसका देशांतर २० भाग अंश पश्चिमी से पश्चिम को १६० अंश पूर्वी तक अर्थात् सब १८० अंश है॥

स्थल के दो बड़े भाग दो महाद्वीप कहलाते हैं और शेष छोटे २ द्वीप सब से बड़ा भाग इस स्थल का वह बड़ा महाद्वीप है जो पूर्वी गोलार्द्ध में है और उसको पुरानी दुनिया कहते हैं इस कारण कि प्राचीन समय से दुनिया के मनुष्य इस भाग को जानते हैं। इस महाद्वीप के औत्तरीय छोर पर सिवरू अंतरीप और दाक्षिणीय ओर पर गुड़होप अंतरीप है और पश्चिमी छोर पर वर्ड अंतरीप और पूर्वी छोर पर पूर्वी अंतरीप है। रूम सागर और कुल्ज़म सागर के मध्य में आजाने के कारण इस महाद्वीप के दो भाग हो गये हैं जिनको स्वेज का डमरूमध्य मिलाता है॥

दूसरा भाग स्थल का वह महाद्वीप है जो पश्चिमी गोलार्द्ध में है और इसको नई दुनिया कहते हैं इस

कारण सन् १४९२ ईसवी में यह भाग जाना गया है। यह महाद्वीप उत्तर से दक्षिण को चला गया है और कार्बीन सागर और मकसीकू की खाड़ी के मध्य में आजाने के कारण इस महाद्वीप के दो भाग होगये हैं जिनको डारैन वा पानामा डमरुमध्य मिलाता है। इस महाद्वीप के दाक्षिणीय छोर पर होर्न अंतरीप और पूर्वी छोर पर सेंटरोक अंतरीप और पश्चिमी छोर पर प्रेन्स आफ़वेल्ज़ अंतरीप है। पूर्वोक्त दो महाद्वीपों के बिना पृथ्वी पर और बहुतसे द्वीप हैं जिन में से प्रसिद्ध प्रसिद्ध नीचे लिखे जाते हैं॥

दुनिया के प्रसिद्ध द्वीप

औत्तरीय हिम महासागर में ग्रीनलेंड, आयसलेंड, इस्पिटज़बर्गन, नवाज़िम्बला। औत्तरीय अटलांटिक। महासागर में ग्रेटब्रिटन, आयरलेंड। अमरीका के किनारे पर न्यफूं डलेंड। कार्बीन सागर में वेस्टइंडीज़ अर्थात् पश्चिमी हिन्दुस्तान के द्वीप। हिन्दुस्तान के दाक्षिणीय कोण पर सीलोन वा लंका॥

पासिफ़िक महासागर में एशिया के पूर्वी तट पर सिंघालीन, जापान के द्वीप और चीन के द्वीप और इनके दक्षिण में मलेशिया द्वीप अर्थात् पूर्वी हिन्दुस्तान के द्वीप परंतु इन में से कुछ पासिफ़िक महासागर और कुछ हिन्द के महासागर में हैं। मलेशिया द्वीपों के दक्षिण में आस्ट्रलेशिया के द्वीप हैं॥

पूर्वी महाद्वीप के बड़े भाग एशिया, यूरोप, अफ़्रीक़ह यह३ हैं और पश्चिमी महाद्वीप के दो भाग बडे औत्तरीय अमरीका और दाक्षिणीय अमरीका हैं। इन भागों को छोड़ पृथ्वी पर एक भाग ओशियानीकह है जिस में आस्ट्रलेशिया, मलेशिया

पौलनएशिया के द्वीप हैं जैसे कि सब भागों का वर्णन ब्योरेवार आगे होगा। इन सब भागों और द्वीपों में ६० किरोड़ के अनुमान मनुष्य बस्ते हैं जिन में से २५ किरोड़ के अनुमान ईसई और ३५ किरोड़ बौद्धमत और १० किरोड़ मुसलमान और १० किरोड़ हिन्दू और शेष १० किरोड़ में भिन्नमत हैं। इन सब की भाषा दो हज़ार के अनुमान हैं॥

स्थल के बड़े बड़े खंडों का वर्णन

१ एशिया का वर्णन

इस खण्ड का वर्णन प्रथम हो चुका अब वर्णन की कुछ आवश्यकता नहीं है॥

यूरोप का वर्णन

यूरोप के उत्तर में औत्तरीय हिम महासागर और सीमा पश्चिम में अटलांटिक महासागर और दक्षिण में रूमसागर और पूर्व में द्वीप समूह सागर मारमोरा सागर, कुस्तुन्तुनिया का मुहाना, काला सागर, क़ाफ़ पर्वत यूराल पर्वत कारा नदी हैं॥

औत्तराय अक्षांश ३६ अंश से ७२ अंश तक और देशांतर पश्चिमी १० अंश से पूर्वी ७० अंश तक॥

यूरोप के औत्तरीय छोर पर औत्तरीय अंतरीप वा नार्थकेप और दाक्षिणीय छोर पर पट्टाट रीफ़ा नाम अंतरीप जो जबल्तारक़ के मुहाने में है और मटापीन अंतरीप जो यूनान में है और पश्चिमी छोर पर

सेंटवेंसेंट अंतरीप फ़िनस्टर अंतरीप और पूर्वी छोर पर यूराल पर्वत। यद्यपि यूरोप स्थल के सब भागे से छोटा है परंतु वहां के निवासियों की चतुराई के कारण अधिक प्रसिद्ध है॥

यूरोप में बहुधा लोहे, तांबे, जस्त, कोयले, चूने के पत्थर की खानें कार्य्यसाधक लाभकारी हैं॥

यूरोप के पर्वत

नाम पर्वत	ठिकाना	उंचाई फ़ुटे में
अल्पस	इटली के उत्तर में	१५८३२
पिरिनेयज़	हस्पानियां के उत्तर में	११५००
अपीनाइनस	इटली में	६५००
कार्पीथेन	इस्टिरिया में	८५००
वाल्कन	रूम में	६०००
डफ़्रन	स्वीडन के उत्तर में	८४००
इटना	सिस्ली में	१०६००
विस्वेस	इटली में	३६००
हलका	आयसलेण्ड में	५२००

यूरोप की प्रसिद्ध नदियां

(१ वल्गा) व अटल जो रूम देश में २३०० मील बहकर ख़िज़र सागर में गिरती है (२ दानूब) जो अलेमान, इस्टिरिया रूम देशों में २२०० मील बहकर काले सागर में गिरती है॥

यूरोप के प्रसिद्ध सागर और खाड़ियां

दक्षिण की ओर अज़फ़ सागर, काला सागर, मारमोरा सागर, रूम का सागर और पश्चिम में बस्की खाड़ी, हाल्सी खाड़ी वा जर्मनी सागर, बालतक सागर और उत्तर में श्वेत सागर ॥

यूरोप सम्बन्धी द्वीप

अटलांटिक महासागर में आयसलेण्ड, ग्रेटब्रिटन के द्वीप, फ़ीरू के द्वीप, अज़ोर्ज़ के द्वीप, और रूम सागर में बलियार्क के द्वीप सार्डनिया, कोर्सीका, इल्बा, सिस्ली, माल्टा, आईडनिया के द्वीप गेडिया और बाल्तक सागर में ज़ीलेण्ड फ्यूनन, गोट-लेण्ड और औत्तरीय हिम महासागर में नवाज़िम्बला, इस्फ़ि-टज़बर्गन है ॥

यूरोप के देश

यूरोप में १७ देश हैं जिनका वर्णन संक्षेप रीति से किया जाता है और प्रत्येक देश की चारों सीमा और राजधानी आदि का ब्यौरा आगे लिखे हुए यंत्र से बिदित होगा ॥

(१ ग्रेटब्रिटन) यह देश बहुत से द्वीपों से संयुक्त है जिनमें से ग्रेटब्रिटन और आयरलेण्ड २ बड़े द्वीप हैं । ग्रेटब्रिटन के औत्तरीय भाग को स्काटलेण्ड कहते हैं जिसका प्रधान स्थान इडनबरा है यह पहाड़ी देश है इस में झील नदी बहुत हैं । पश्चिमी भाग को (वेल्ज़) कहते हैं यह भी पर्वती देश है ॥

दाक्षिणीय भाग को (इंगलेण्ड) वा इंगलिस्तान कहते हैं इसकी पृथ्वी स्काटलेण्ड और वेल्ज़ की अपेक्षा समधरातल रूप है इसकी राजधानी लन्दन शहर टेम्स नदी के दोनों

और ४० मील के घेरे में बस्ता है यह शहर पृथ्वी भर के शहरों से अच्छा है इस में ३० लाख मनुष्य बस्ते हैं और हिन्दुस्तान से ६००० मील के अंतर पर है। (आयरलेण्ड)यह एक द्वीप अलग है इसकी पृथ्वी ऊंची नीची है और कहीं दल-दल है। इंगलेण्ड के प्रसिद्ध शहरों में से वर्मनधाम शफ़ील्ड लोहे और फ़ौलाद की बस्तुओं के बनने में प्रसिद्ध है और मानचस्टर पेज़ली गिलासगो, इन शहरों में मलमल, ख़ासा आदि रूई के बस्त्र बनते हैं और इसी प्रकार उसके और शहरों में किसी में बनात और किसा में रेशमी बस्त्र आदि कलों से बनाये जाते हैं। इंगलेण्ड के निवासियों को अंगरेज़ कहते हैं जिनका राज्य आज कल हिन्दुस्तान में है। ब्रिटन का राज्य यूरोप के सब राज्यों से बलवान् है॥

(२ फ़्रांस) पवन पानी यहां का साधारण और पृथ्वी उपजाऊ है इस देश में मदिरा और रेशम के बस्त्र बहुत अच्छे होते हैं॥

(३ बिल्जियम्) इस देश में अन्न बहुतायत से उत्पन्न होता है और यहां कांच पर रंगत बहुत अच्छी की जाती है और कतां के महीन कपड़े और चित्र अच्छे बनते हैं॥

(४ हालेण्ड) इस देश के मनुष्य बहुधा व्यौपारी और महाजन हैं॥

(५ प्रूशिया) इस देश के मनुष्य बलवान् शूरबीर हैं परंतु खेती का काम थोड़ा जानते हैं॥

(६ जर्मनी) इसको अलेमान भी कहते हैं यहां के लोग सीधे स्वभाव और शूरबीर विद्यावान और विद्या के रचनेवाले हैं। इस देश में ४ भाग इस क्रम से हैं (१ हुनोवर) जिसका

प्रधानस्थान हुनोवर है (२ वरटमवर्ग) जिसका मुख्य स्थान इस्टट गार्ड (३ व्यूरियह) जिसका प्रधानस्थान शूनज (४ सेक्सनी) जिसका प्रधानस्थान ड्रसडन है ॥

(७ इस्टरिया) इस देश की पृथ्वी उपजाऊ और खाने की बस्तुएं श्रेष्ठ हैं ॥

(८डन्मार्क) इस में बहुतसे द्वीप हैं जिन में से ज़ीलेण्ड, फ्यूनन, लेलेण्ड, फ़ालिस्टर, आयसलेण्ड, बेनहूम यह ६ बड़े द्वीप हैं और एक द्वीपों का समूह है जिनका नाम फ़ारू के द्वीप हैं ॥

(९ स्वीडन) इस देश में आठ नौ महीने तक जाड़ा रहता है और रूपा, तांबा, सीसह, लोहा, चमड़ा, चर्बी इस देश की व्योपार की बस्तुएं हैं ॥

(१० स्वीटज़रलेण्ड) इस देश में पर्बत और झील बहुत हैं और पर्वत की शिखाओं पर हिम सदैव जमा रहता है ॥

(११ नार्वे) इस देश की लकड़ी, लोहा, तांबा व्योपार की बस्तु हैं ॥

(१२ फ़रिंगस्तानीरूस) रूस देश इतना बिस्तृत है कि संपूर्ण पृथ्वी पर इसकी बराबर कोई देश नहीं है। संपूर्ण एशिया और यूरोप के उत्तर ओर यह देश है परंतु बहुधा बड़े २ मैदान और जंगल इस में हैं केवल बीच में और दक्षिण की ओर खेती होती है। रेशम, चमड़ा, चर्बी, ऊन के बस्त्र इस देश में व्योपार की बस्तु हैं ॥

(१३ फ़रिंगस्तानीरूम) रेशम, साबर, क़ालीन इस देश में व्योपार की बस्तु हैं ॥

(१४ यूनान) यह देश कई बर्ष तक रूमवालों के अधिकार में रहा परंतु अब १८३३ ईसवी से अलग राज्य होगया है ॥

(१५ इटली) इस देश में नौ सूबे जैसे सार्डेनिया, नेप्लज़, टस्कनी, लामवर्डी पापा के अधिकारी देश आदि के थे परंतु अब सन् १८६१ ई० से यह सब पापा के अधिकारी देशों बिना सार्डेनिया के बादशाहत के अधिकार में होकर एक राज्य इटालियह के नाम से होगया है। कपास, मदिरा, चीनी इस देश की व्यौपार की बस्तु हैं ॥

(१६ हस्पानिया) यह देश प्रायद्वीपाकार है यहां के मनुष्य परीक्षाकारी हैं इस देश में मायर्क़ह, मनर्क़ह, अबज़ह यह तीन द्वीप हैं ॥

(१७ पुर्तगाल) इस देश के मनुष्य व्यौपार में बड़े चतुर हैं यहां उस प्रकार के वृक्ष बहुतायत से होते हैं जिनकी छाल से बोतलों के काक बनाये जाते हैं इस देश में अंगूर की मदिरा और जैतून के तेल का बड़ा व्यौपार होता है ॥

यूरोप के देश

	देश का नाम	चारों सीमा				राजधानी	क्षेत्रफलवर्गात्मक माल	मनुष्यसंख्या।
		उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम			
१	ब्रिटन	औत्तरीयहिममहासागर	जर्मनीसागर	इंग्लिशचानल	आपर्श चानल, सेंटजार्जचानल	लण्डन	८७६00	२३१00000
	आयरलेण्ड	अटलांटिक महासागर	आयरलेण्ड का सागर	अटलांटिक महासागर	अटलांटिक महासागर	डवलन	३१७४१	८२00000
२	फ्रांस	विल्ज़ियम	जर्मनी, स्वीटज़रलेण्ड, इटली	पिर्नियज़पर्वत, रूम का सागर	विसकी खाड़ी	पेरस	२०५000	३६0६0000
३	विलज़ियम	हालेण्ड	प्रूशिया	फ्रांस	जर्मनी सागर	कर्सिल्स	१२000	४५00000
४	हालेण्ड	जर्मनी सागर	प्रूशिया, हूनोवर	विल्ज़ियम	जर्मनी सागर	अमिस्टरडाम	१३१०६	३३00000
५	प्रूशिया	जर्मनी सागर	पूलेण्ड, रूस	जर्मनी इस्टरिया।	हालेण्ड, विल्ज़ियम्	वर्लन	१०७८00	१६२000

	देश का नाम	चारों सीमा				राजधानी	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	मनुष्य संख्या
		उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम			
६	जर्मनी	जर्मनी सागर, डनमार्क	इस्टरिया, रूस	इस्टरिया, इटली स्वीटज़रलेण्ड	हालेंड विलज़ियम फ्रांस	0	६४०००	१६२०००००
७	इस्टरियां	प्रूशिया, रूस	रूम, रूस	इटली, रूम	इटली स्वीटज़रलेंड जर्मनी	बयाना	२६००००	३००००००
८	डनमार्क	इस्कागेक का मुहाना	कटी गेट का मुहाना, वाल्तक सागर	जर्मनी	जर्मनी सागर	कोपिनहोंगन	२२६८०	३०००००
९	स्वीडन	औत्तरीयहिममहासागर	रूस, वाल्तक सागर	वाल्तक सागर	नार्वे	स्टाकहे.ल्म	१७०१००	३२०००००
१०	स्वाटज़रलेंड	जर्मनी	इस्टरिया	इटली	फ्रांस	बरन	१५२५०	२४०००००
११	नार्वे	औत्तरीयहि. ममहासागर	स्वीड़न	इस्कागेट का मुहाना	अटलांटिक महासागर	कृष्टिया-ना	१३४३०६	४०००००

देश का नाम	चारों सीमा				राजधानी	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	मनुष्य संख्या
	उत्तर	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम			
फ़िरंगस्तानी रूस	औत्तरीयहिमसमहासागर	एशिया	रूम, काला सागर	स्वीडन, प्रशिया, इस्टरिया	सेण्टपीटर्स बर्ग	६०५०००००	२०७००००
फ़िरंगस्तानी रूम	इस्टरिया रूस	मार मोरा सागर काला सागर	यूनान	इड्रियाटक सागर	कुस्तुन्तुनिया	१६००००००	१६००००००
यूनान	रूम	द्वीप समूह सागर	रूम का सागर	रूम का सागर	इथेनी	१००००००	१००००००
इटली	अल्पस पर्वत	इड्रियाटक सागर	रूम का सागर	फ़्रांस, रूम का सागर	ल्यरन	२३५०००००	२३५०००००
हस्पानिया	बस्की खाड़ी फ़्रांस	रूम का सागर	रूम का सागर	अटलांटिक महासागर, पुर्तगाल	मेडर्ड	१८२६००	१४३०००००
पुर्तगाल	हस्पानिया	हस्पानिया	अटलांटिक महासागर	अटलांटिक महासागर	लिखन	३६६५००	३८१०००००

३ अफ़्रीक़ह का वर्णन

अफ़्रीक़ह यूरोप के दक्षिण और एशिया के दक्षिण पश्चिम में है। इसके उत्तर में रूम सागर और दक्षिण में हिन्द का महासागर, अटलांटिक महासागर, कुल्ज़म सागर, स्वीज़ का डमरूमध्य जिसकी चौड़ाई ६० मील है और पश्चिम में अटलांटिक महासागर है। यह भाग प्राय द्वीपाकार है जो पुरानी दुनिया के और भागों से मिलता है॥

अक्षांश दाक्षिणीय ३५ अंश से औत्तरीय ३६ अंश तक और देशांतर पश्चिमी १८ अंश से पूर्वी ५१ अंश तक है। बहुधा भाग इसका पृथ्वी के उष्ण कटिबंध में है क्योंकि मध्यरेखा उसके मध्य में होके गई है। अफ़्रीक़ह के औत्तरीय छोर पर बोन अंतरीप और दाक्षिणीय छोर पर गुडहोप अंतरीप और पश्चिमी छोर पर वर्ड अंतरीप और पूर्वी छोर पर ग्वारडाफ़ू अंतरीप। अफ़्रीक़ह में बहुतसी धरती रेतली है यहां का रेत ग्रीष्म ऋतु में ऐसा तप्त हो जाता है, जैसा भाड़ की बालू यहां के बहुधा मनुष्य हब्शी और मूर्तिपूजक हैं परंतु कुल्ज़म सागर और रूम सागर के समीप के रहनेवाले अ़रब के निवासियों से मिलते हैं॥

पर्वत

प्रसिद्ध पर्वत इस में ३ हैं १ अतलस जिसकी श्रेणी रूम सागर के सन्मुख है २ हब्श पर्वत जो पूर्वी अफ़्रीक़ह में हैं ३ क़मर पर्वत जो मध्य अफ़्रीक़ह में है॥

यहां की प्रसिद्ध नदियों में से १ नील नदी जो विक्टोरिया नियांज़ह नाम झील से (जिसकी ठीक औत्तरीय सीमा पर मध्यरेखा है) निकलकर नोबिया और मिस्र देश में दो हज़ार मील बहकर रूमसागर में जागिरी है। इसके चढ़ाव से बहुधा नीचे स्थानों में खेती होती है। सेनीगल, गंबिया, नयजा यह ३ नदियां पश्चिमी अफ़्रीक़ह में और अरंज नदी दाक्षिणीय अफ़्रीक़ह में प्रसिद्ध हैं ॥ नदी

अफ़्रीक़ह के संबंधी द्वीप इस क्रम से हैं कि हिंद के महासागर में मदग़ास्कर बहुत बड़ा द्वीप अफ़्रीक़ह की आग्नेय दिशा में है और अटलांटिक महासागर में कनरी द्वीप, मडेरा, सेंटहलीना। यद्यपि सेंटहलीना बहुत छोटा द्वीप है परंतु बहुत प्रसिद्ध है बहुधा जहाज़ यहां आकर ठहरते हैं। अफ़्रीक़ह में ब्योपार की बस्तुएं सोना, गोद, हाथीदांत, चमड़ा, दास हैं परंतु दासों का बेचना अंगरेज़ी व्यवस्था के अनुसार बर्जित है ॥ द्वीप

	देश का नाम	ठिकाना	राज-धानी	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	मनुष्य संख्या	
१	मिस्र	रूम सागर के उत्तर में	क़ाहिरा	१५0000	२५00000	
२	नोविया	मिस्र के दक्षिण में	सनार	0	४00000	
३	हब्श	नोविया के दक्षिण में	गोंडार	३७५000.	३५00000	
४	बरबर	बड़े जंगल के उत्तर में	मराकू	३00000	११000000	
५	महा जंगल	बरबर के दक्षिण में	0	२५00000	0	मध्य अफ़्रीक़ह
६	सूदान	महाजंगल के पूर्व में	टंवकटू	0	0	मध्य अफ़्रीक़ह
७	सेनीगंविया	महाजंगल के दक्षिण में	0	0	0	
८	पूर्वी अफ़्रीक़ह	हब्स के दक्षिण में	सिफ़ाला	0	0	
९	केपकालोनी	काफ़िरस्तान के पश्चिम में	केपटौन	१३0000	१८0000	
१०	काफ़िरस्तान	केपकालोनी के पूर्व में	0	0	0	दाक्षिणाय अफ़्रीक़ह
११	मिसकन विचवीना	केपकालोनी के उत्तर में	0	0	0	दाक्षिणाय अफ़्रीक़ह

४ अमरीका का वर्णन

अमरीका दो प्रायद्वीपाकार हैं एक को उन में से औत्तरीय अमरीका और दूसरे को दाक्षिणीय अमरीका कहते हैं और ये दोनों कार्बीन सागर और मक्सीकू की खाड़ी के बीच में आजाने के कारण आपस में जुदे हो गये हैं परंतु पानामा वा डरैन का डमरूमध्य एक स्थान पर दोनों को मिलाता है। अमरीका के चारों ओर समुद्र है। इस महाद्वीप को इटली देशीय कलम्बस ने १४६२ ई० में जाना था इस से पहिले किसी ने इसको न जाना था। अमरीका में सोने, चांदी, तांबे की खानि बहुतायत से हैं। गाय, घोड़ा, भेड़, बकरी की उत्पत्ति पुरानी दुनिया से अमरीका में आई है। यहां एक पशु जिसका नाम लामा है ऊंट की सदृश परंतु डील में छोटा होता है और इसकी ऊन से अल्पाका बुना जाता है। संपूर्ण बासी ४ किरोड़ ६० लाख जिन में से ठेठ निवासी यहां के ८० लाख और शेष इंगलिस्तान आदि देशों के हैं। यहां के ठेठ निवासियों का मत कुछ नहीं परंतु केवल स्रष्टा को जानते हैं और और शेष ईसाई हैं॥

औत्तरीय अमरीका का वर्णन

इसका पश्चिमी देशांतर ५४ अंश से १७० अंश तक और औत्तरीय अक्षांश, ७ अंश से ७५ अंश तक॥

इस में ४ प्रसिद्ध पर्वत हैं १ रौका पर्वत जो पर्वत ब्रिटिश अमरीका और सूबेजात मुत्तहद में उत्तर

दक्षिण है २ मस्कीकू पर्वत जो मस्कीकू और ग्वाटि-मला देशों में है ३ कीली फ़ोर्निया पर्वत जो कीली फ़ोर्निया देश में है ४ अबेग़ेती पर्वत जो सूबेजात मुत्तहद में है ॥

नदी — प्रसिद्ध नदियां इस में सेंटलार्न्स, हिदसन, पटूमक, डिलावार, मसीसपी यह ५ हैं जिन में से मसीसपी नदी संपूर्ण पृथ्वी की नदियों से लंबी है अर्थात् ४२०० मील है ॥

खाड़ी — इस में प्रसिद्ध खाड़ी इस क्रम से हैं उत्तर की ओर बिफ़न, हिदसन, सेंटलार्न्स यह ३ खाड़ी हैं और दक्षिण में डिलावार, मस्कीकू, केम्पची, कीली-फ़ोर्निया यह चार खाड़ी हैं ॥

द्वीप — प्रसिद्ध द्वीप इस में क्रम से हैं कि औत्तरीय हिम महासागर में ग्रीनलेण्ड, आयसलेण्ड, मिलविल यह ३ द्वीप और अटलांटिक महासागर में न्यूफ़ूडलेंड, रासब्रीटन यह द्वीप और पासफ़िक महासागर में बिपनकुवज़्, मल्कहशार्ल्ट ॥

औत्तरीय अमरीका के देश

	देश का नाम	ठिकाना	राजधानी	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	मनुष्य संख्या
१	ब्रिटिशअमरीका	बिफ़न की खाड़ी के दक्षिण में	टूरानटू	२५०००००	२६०००००
२	रूसियों की अमरीका	औत्तरीयहिममहासागर के दक्षिण में	०	३७१०००	६६०००
३	डनमार्कियों की अमरीका	बिफ़न की खाड़ी के पूर्व में	०	५०००००	५७०००
४	सूबेजात मुत्तहद	ब्रिटिशअमरीका के दक्षिण में	०	२५०००००	१७००००००
५	मक्सीकू	सूबेजात मुत्तहद के दक्षिण में	मक्सीकू	१२०००००	७००००००
६	ग्वाटिमला	मक्सीकू के दक्षिण में	ग्वाटिमला	२५००००	२०००००

दाक्षिणीय अमरीका का वर्णन

इसका पश्चिमी देशांतर ३५ अंश से ८१ अंश तक और अक्षांश दाक्षिणीय ५६ अंश से औत्तरीय १२ अंश तक ॥

नदी — इस में नदियां बहुत और बड़ी हैं सब से बड़ी एक नदी इस में अमज़न जिसकी लंबाई ४००० मील और चौड़ाई इस नदी की पृथ्वी भर की संपूर्ण नदियां से अधिक और मुहरी पर क़ाम १८० मील है और इतनी प्रबलता से समुद्र में गिरती है कि २०० मील समुद्र का जल मीठा होजाता है ॥

पर्वत — पर्वत इस में बहुत ऊंचे २ हैं उन में से इंडस वा केडुर्ल पर्वत जो दक्षिण से उत्तर को पासिफ़िक महासागर के सन्मुख चलागया है बहुत लम्बा है ॥

खाड़ी — इस में ३ खाड़ी प्रसिद्ध हैं उत्तर में डारैन की खाड़ी, पानामा की खाड़ी और पूर्व में पारिया खाड़ी ॥

द्वीप — प्रसिद्ध द्वीप इस में इस प्रकार हैं कि अटलांटिक महासागर में लिवर्ड के द्वीप, वेंडवर्ट के द्वीप, फ़ाक-लेंड के द्वीप, और पासिफ़िक महासागर में चिलो के द्वीप और दाक्षिणीय हिम महासागर में ग्रेहमलेंड के द्वीप, ट्रिड़लफ़िगो । ट्रिड़लफ़िगो अमरीका के दक्षिण में है और शीतता और बायु की अधिकता के कारण बस्ता नहीं और इस में जंगल के जंगल हिम की अधिकता के कारण ऐसे बिदित होते हैं जैसे बहुत से पर्वत ज्वालामुखी होते हैं और इसी कारण इस द्वीप, को ट्रिडल फ्यूगो अर्थात् अग्नि की खानि कहते हैं ॥

दाच्छिणीय अमरीका के देश

	देश का नाम	ठिकाना	राजधानी	क्षेत्रफल वर्गात्मक मील	मनुष्य संख्या
१	कुलंबिया	उत्तर की ओर	केटो	११०००00	३२०००00
२	पीरू	कुलंबिया के दच्छिण में	लायमा	५०००00	१७०००00
३	बुलबिया	पीरू के दच्छिण में	चिकोसिक्क	४०००00	१०००००0
४	चिली	पीरू के दच्छिण में	सेएठअगो	१७००00	१५०००00
५	लाप्लैटा	बुलबिया के दच्छिण में	ब्यूनस एअर्ज़	६०००00	१०००००0
६	डरैगो	लप्लैटा के पूर्व में	मोडिरिडूड	१०००00	१५००00
७	ज़ेल	कुलंब्रिया के दच्छिण में	रिपूडेजनरो	२७००00	७०००00
८	पटिगो निया	लाप्लैटा के दच्छिण में	0	३५००00	0
९	ग्वाला	ब्रजिल के पूर्व में	0	१५००0	२०००00
१०	प्रैगो	लाप्लैटा के ईशान में	स्मपशन	१०००00	३०००00

वेस्टराडीज़ अर्थात् पश्चिमी हिन्दुस्तान के द्वीप

ये द्वीपों के कई समूह औत्तरीय और दाक्षिणीय अमरीका के बीच में पूर्वी तट पर हैं इनको पश्चिमी हिन्दुस्तान इस कारण कहते हैं कि जब कलम्बस वहां पहुंचा तो उसने यह जाना कि यह देश पूर्वी हिन्दुस्तान से मिला है इस कारण उसने इनका नाम पश्चिमीय हिन्दुस्तान ठैराया वही नाम आज तक चला आता है। इन द्वीपों में मुख्य ५ समूह इस क्रम से हैं १ वहिमज़ जो इंगलिस्तान के अधिकार में है २ बड़ा इंटलज़ इस में क्यूवा जमीका, हेटी, पोर्टरीकू, यह ४ बड़े द्वीप हैं। क्यूवा हस्पानिया के अधिकार में और जमीका इंगलिस्तान के और हेटी निज निवासियों के अधिकार में है और पोर्टराकू इस्पेनवालों के अधिकार में। ३ छोटा इंटलज़ यह हालेराड के अधिकार में ४ वर्जन के द्वीप जिन में से आधे इंगलिस्तान के अधिकार में। और आधे डन्मार्क के। ५ कार्वीन के द्वीप जिन में से आधे, इंगलिस्तान के अधिकार में और आधे शेष फ़्रांस और हालेराड के अधिकार में। इन समूहों में गरम मसाले, ईख, रूई, बुन ये बस्तुएं उत्पन्न होती हैं और बहुधा फ़रिंगस्तान में इन्ह द्वीपों से जाती हैं॥

ओशियानीका के द्वीपों का वर्णन

ओशियानीका के द्वीपों को ३ भागों में बिभाग किया १ आस्ट्रलेशिया के द्वीप २ मलेशिया ३ पैालेनेशिया अब प्रत्येक का वर्णन क्रम से आगे किया जाता है॥

आस्ट्रलेशिया का वर्णन

आस्ट्रलेशिया कई द्वीपों के समूह का नाम है जिनका संक्षिप्त वर्णन लिखते हैं ॥

१ आस्ट्रेलिया यह द्वीप संपूर्ण पृथ्वी के द्वीपों से बड़ा है। अंगरेज़ों ने इस द्वीप में बहुतसे शहर बसाये हैं। यहां की पृथ्वी अत्यंत उपजाऊ और इस में तांबे, सीसे, लोहे की खानि हैं। इन दिनों यहां सुवर्ण भी बहुतायत से मिलता है। श्वेत अक़ाब काला राजहंस यहां होते हैं हिंसक पशु यहां उत्पन्न नहीं होते। एक अद्भुत पशु जिसका नाम कंगरू है यहां होता है इसका आकार कुछ गिलहरी का सा और डील मनुष्य से अधिक और उसके पेट का चर्म झोली सा होता है जिस में भय के समय अपने बच्चों को रख लेता है। यहां के मनुष्य जंगली और मनुष्यभक्षक हैं ॥

२ न्यूगनी यह बहुत बड़ा द्वीप आस्ट्रेलिया के उत्तर ओर है॥

३ वेण्डमेज़लेण्ड यह द्वीप आस्ट्रेलिया के दक्षिण में कुछ अंतर पर है। इस द्वीप में लोहे, तांबे, फिटकरी, लूण, कंकर की खानि हैं। यहां पर स्लेट का पत्थर बहुतायत से होता है। इस द्वीप में अंगरेज़ों ने इंगलिस्तान के निवासियों को लाकर बसाया है ॥

४ न्यूज़ीलेण्ड के द्वीप यह आस्ट्रेलिया के पूर्व पश्चिमी गोलार्द्ध में हैं और इन में २ बड़े द्वीप हैं जिनके बीच में कुक्स का मुहाना है। यहां बहुधा इंगलिस्तान के मनुष्य बस्ते हैं और शेष मुख्य निवासी यहां के मलायावालों की संतान से हैं। यहां पर सोना, कोयला बहुतायत से पाया जाता है॥

मलेशिया का वर्णन

मलेशिया कई द्वीपों का नाम है जो हिंद के सागर और पासिफ़िक महासागर के बीच एशिया की आग्नेय दिशा में हैं और उनका वर्णन संक्षेप से नीचे किया जाता है ॥

१ सुमात्रा यह द्वीप अंगरेज़ों के अधिकार में है और इस में बंगोलिन शहर प्रसिद्ध है ॥

२ जावा यह द्वीप डच के अधिकार में है। इस में काली मिर्च और करपूर का बड़ा बनज होता है ॥

३ बोर्नियू यह द्वीप आस्ट्रेलिया को छोड़ और सारी पृथ्वी के द्वीपों से बड़ा है परंतु प्रसिद्ध कम है इस में एक भांति का बंदर मनुष्य के डील से बड़ा होता है और इस में हीरे, सोने की खानि हैं ॥

४ स्लीवेज़ इस द्वीप में भांति २ के वृक्ष उत्पन्न होते हैं जिन से हलाहल निकलता है ॥

५ तैमूर ॥

६ मलकस के द्वीप और बांदा के द्वीप कि ये दोनों समूह मसाहने के द्वीप कहाते हैं और डच के अधिकार में यह द्वीप इस कारण से अधिक प्रसिद्ध कि इस में गरम मसाले, लोंग, जायफल आदि का बड़ा बनज होता है। मलकस के द्वीपों में अमूनिया बड़ा द्वीप है ॥

७ ल्फ़ीपायन के द्वीप ये कई द्वीप हैं जिन में से मंदना और लूज़न २ द्वीप बड़े हैं। यहां ईख बहुतायत से उत्पन्न होती है। लूज़न का प्रसिद्ध शहर मनीला है ॥

(प्रकट हो) कि इन सब द्वीपों को १ ईस्टन अर्क जीगू अर्थात् पूर्वी द्वीपसमूह कहते हैं ॥

पौलनेशिया का वर्णन

पौलनेशिया उन द्वीपों के समूह का नाम है जो मध्यरेखा के दोनों ओर पासिफ़िक महासागर में अलग २ और अपरमित हैं पौलनेशिया का अर्थ भी द्वीपों का समूह है। इन में से बहुतेरे द्वीप मूंगे से बने हैं और उनकी चटानें द्वीपों के चारों ओर हैं और वे चटानें वहां के निवासियों को समुद्र के भय से बचाती हैं। पहिले इन द्वीपों में बड़े २ पशु न थे परंतु अब यूरोपवालों ने लाकर फैलाये हैं। इन द्वीपों के निवासी २ प्रकार के हैं अर्थात् जो द्वीप पश्चिम की ओर हैं उन में हबशी और जो पूर्व की ओर हैं उन में मलाया के निवासियों की संतान से हैं। पौलनेशिया में प्रसिद्ध द्वीप इस क्रम से हैं कि मध्यरेखा के उत्तर और एशिया और अमरीका के बीच में लडरून के द्वीप, पालू के द्वीप, सांडविच के द्वीप और मध्यरेखा के दक्षिण और अमरीका और आस्ट्रलेशिया के मध्य में फ्रिंडली के द्वीप सुसाईटी के द्वीप मार्कीज़स के द्वीप हैं। जिन दिनों में पहिले पहल यूरोपवाले इन द्वीपों में गये उन दिनों यहां के निवासी मूर्त्तिपूजक थे परंतु अब सुसाइटी और सांडविच के द्वीपों के निवासियों ने मूर्त्तियों को खंडित कर दिया और बहुतेरों ने ईसाई मत धारण कर लिया॥

(प्रकट हो) कि स्थल के संपूर्ण भागों का वर्णन हो चुका अब पृथ्वी के जिस २ स्थान पर महारानी विक्टोरिया का अधिकार है उसका व्योरा यह है कि औत्तरीय हिम महासागर में हिलीगोलेण्ड द्वीप और अटलांटिक महासागर में ब्रिटन के द्वीप और रूम महासागर में जबलतारक, माल्टा, गोज़ू और

औत्तरीय अमरीका में कनेडा आदि जो ब्रिटिश अमरीका कहलाते हैं औ हिंड्यौस और पश्चिमी हिन्दुस्तान में जमीका, बार्बी-डोज़ ब्रनइदद आदि द्वीप हैं और दाक्षिणीय अमरीका में ग्याना फ़ाकलेण्ड के द्वीप और अटलांटिक महासागर में सेंटहलीना द्वीप और अफ़्रीक़ह में सेराल्यूनिया, गेंबिया कोस्ट अंतरीप, गुडहोप अंतरीप और एशिया में बहुधा भाग हिन्दुस्तान का और अराकान, पीगू, मोलमीन, मलाका आदि की कमिश्नरी और हिन्द के महासागर में इदन, मोरीसस, क्वीप, लंका, पीनाग, संगापुर द्वीप और पासिफ़िक महासागर में आस्ट्रेलिया, वेण्ड-मेज़लेण्ड न्यूगनी ये द्वीप हैं ॥

अलमिति द्वितीय भाग:

इश्तिहार

(प्रकट हो) कि क़ानून २० सन् १८४७ ईसवी के अनुसार इस जगद्भूगोल को कोई दूसरा मनुष्य इस पुस्तक के कर्त्ता मुन्शी ईश्वरी प्रसाद सबैग मास्टर मदर्सह दस्तूर तालीम की आज्ञा के बिना छाप नहीं सकता ॥